वर्ष 44 अंक 12 दिसम्बर 2017

₹ 15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 44 ● अंक 12 ● दिसम्बर 2017 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक **विमलेश आहूजा**

सहायक सम्पादक **सुभाष चन्द्र**

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries

Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
11. समाचार
21. वर्ग पहेली
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

मुखपृष्ठ : निरंकारी आर्टग्रुप

विशेष / लेख

6. बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के अनमोल वचन

7. सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी के दिव्य वचन

9. सादगी की मूर्ति ...
: कैलाश जैन

19. क्या होता है 'स्पेश सूट'
: विद्या प्रकाश

24. संगाई
: डॉ. परशुराम शुक्ल

28. दूरबीन की खोज
: राधा नाचीज

38. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल

39. जासूसी जूते
: डॉ. विनोद गुप्ता

40. शीशे जैसी चमकने ....
: किरणबाला

43. वृक्षों में आत्मा
: रूपनारायण काबरा

कविताएं

8. दिसम्बर की सुनो
: गफूर 'स्नेही'

16. स्वच्छता फैलायें आओ करें सफाई
: हरजीत निषाद

27 सुन भाई! सुन
: भानूदत्त त्रिपाठी

30. सूरज का पाठ
: कमलसिंह चौहान

30. सर्दी
: गफूर 'स्नेही'

33. सीख नदी की
: महेन्द्र सिंह शेखावत

कहानियां

17. क्रिसमस उपहार
: शिवनारायण

22. कौआ और कबूतर
: महेन्द्र सिंह शेखावत

31. हिम्मत न हारी
: ईलू रानी

41. अनोखा घुड़सवार
: रामकुमार आत्रेय

46. देखे जो न उलूक
: राधेलाल 'नवचक्र'

अपना लक्ष्य पहचानें और आगे बढ़ें

सभी विद्यार्थियों ने अपने अध्यापक जी के कक्षा में आगमन पर अभिवादन किया और अपनी–अपनी जगह पर बैठ गये। तत्पश्चात् एक विद्यार्थी ने अध्यापक जी से प्रश्न पूछने की अनुमति मांगी। उसने पूछा– 'सर, हर आरम्भ की शुरुआत कैसे होती है और हर आरम्भ का अन्त क्यों होता है।'

अध्यापक ने अपनी बात आरम्भ की और कहा– अगर आप यह प्रश्न ही न पूछते तो मैं उत्तर कैसे दे पाता। आपका प्रश्न ही मेरे उत्तर देने का कारण बना, इस प्रकार मेरे उत्तर देने की प्रक्रिया आरम्भ हुई। इसी प्रकार आपने इस स्कूल में प्रथम कक्षा में दाखिला लिया और आज आप उच्च कक्षा तक पहुँच गये हो। हर वर्ष एक नयी कक्षा में आपने प्रवेश पाया। आपके ज्ञान में लगातार वृद्धि भी हुई। पहली से दूसरी कक्षा में जाने के लिए पहली कक्षा को छोड़ना ही होगा और यही छोड़ना दूसरी कक्षा में आगमन का कारण एवं आरम्भ होगा।'

सभी विद्यार्थियों ने अध्यापक जी को धन्यवाद दिया क्योंकि उनको अपनी जिज्ञासा का उत्तर मिल गया था।

वास्तव में यह सत्य भी है। किसी मंजिल तक पहुँचना हो तो यात्रा आरम्भ करनी पड़ती है। जिस साधन से यात्रा की होती है उसको छोड़ना भी पड़ता है अन्यथा वाहन में बैठे रहने से और गंतव्य तक पहुँच जाने पर भी यात्रा सम्पन्न नहीं होती।

वाहन केवल सुविधा मात्र है गंतव्य यानि मंजिल पर पहुँचने के लिए। इसी प्रकार हर वर्ष दिसम्बर माह भी वर्ष का अन्तिम चरण होता है नये वर्ष में प्रवेश पाने के लिए। इस बात की याद दिलाने के लिए कि जिस संकल्प, इरादे और निश्चित लक्ष्य को लेकर हमने नये वर्ष में कदम रखा था वह लक्ष्य पूरा हुआ या नहीं, अगर नहीं हुआ है तो अभी भी समय है उस लक्ष्य को पूरा किया जा सकता है।

हम चाहें या न चाहें यह माह भी अन्य बाकी महीनों की तरह बीत जाएगा। हर साल यह दिसम्बर माह आता रहेगा और हम सबको याद दिलाता रहेगा कि हमारे द्वारा किए गए संकल्प, उद्देश्य और लक्ष्य हमने पूर्ण किए या नहीं।

प्यारे साथियों! हमें भी सोचना होगा कि हमारा शरीर जो हमारे जीवन को चलाने का साधन है अर्थात् हमारा वाहन है उसे हमने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन बनाया या नहीं। कहीं बिना मंजिल के केवल यात्रा ही तो नहीं रह गई और क्या हमें अपनी मंजिल का पता भी है? मंजिल पर पहुँचने पर यात्रा स्वयं ही समाप्त हो जाती है। आओ, पहले अपने लक्ष्य को पहचानें और फिर आलस्य त्यागकर एवं पूरी शक्ति से अपना कर्म करें।

– विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 162

सभ तों वड्डा पाप ए लोको जे प्रभ दर्शन पाया नहीं।
सभ तों वड्डा पाप ए लोको जे गुण जीभा गाया नहीं।
सभ तों वड्डा पाप ए लोको जेकर माण गंवाया नहीं।
सभ तों वड्डा पाप ए लोको जेकर सीस झुकाया नहीं।
सभ तों वड्डा पाप ए लोको गुर चरनीं चित लाया नहीं।
सभ तों वड्डा पाप ए लोको दसवां द्वारा पाया नहीं।
सभ तों वड्डा पाप ए लोको मन नूं जे समझाया नहीं।
सभ तों वड्डा पाप ए लोको पूरा गुर जे ध्याया नहीं।
सभ तों वड्डा पुन्न है एहो जीआं दा कल्यान करे।
कहे अवतार ओह दानी वड्डा जो नाम भंडारा दान करे।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि संसार में आमतौर पर लोगों में पाप और पुण्य को लेकर चर्चाएं होती रहती हैं। संसार में लोग खाने–पीने, पहनने–रहने आदि से सम्बन्धित व्यावहारिक जीवन की बातों को ही पाप–पुण्य मानकर उलझे रहते हैं। इन चर्चाओं में पाप सामान्यतया अशुभ कर्म को और पुण्य शुभ कर्म को माना जाता है। पाप–पुण्य की व्याख्या के द्वारा सबसे बड़े पाप कर्म को स्पष्ट करते हुए बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि अनमोल मानव जन्म पाकर भी इस अंग–संग रमे राम का, इस प्रभु का दर्शन–दीदार न कर पाना ही सबसे बड़ा पाप है। इस प्रभु–परमात्मा को पाकर जिह्वा से इसका गुणगान न करना सबसे बड़ा पाप है। यही नहीं तन, मन और धन की ताकतों के कारण उत्पन्न अभिमान को न गंवाना भी सबसे बड़ा पाप है। अभिमान में आकर अकड़ में ही जीवन व्यतीत होता रहा और सद्गुरु के चरणों में शीश न झुकाया तो यह सबसे बड़ा पाप है। जिस सद्गुरु की कृपा से नौ प्रकृतियों के साथ दसवें ब्रह्म अर्थात् इस अविनाशी निराकार–परमात्मा का बोध प्राप्त हुआ, इसके चरणों में मन, बुद्धि, चित्त को न लगाकर संसार में ही लगाए रखना वास्तविकता में सबसे बड़ा पाप है। इस चंचल मन को समझा कर गुरु चरणों में न लगाना भी सबसे बड़ा पाप है। अगर मन के बहकावे में आकर पूर्ण सद्गुरु को ध्याया नहीं तो यह सबसे बड़ा पाप है। स्पष्ट है कि सबसे बड़ा पुण्य यही है कि मन को समझाकर गुरु–चरणों में शीश झुकाएं और इसी में अपना चित्त लगाएं। सबसे बड़ा पुण्य यही है कि अपना मान गंवाकर गुरु–चरणों में ध्यान लगाएं और प्रभु के दर्शन पाकर जिह्वा से इसका गुणगान करें। जो ऐसा करते हैं वो सबसे बड़ा पुण्य कर्म करते हैं और समस्त जीवों का कल्याण करते हैं।

बाबा अवतार सिंह बता रहें हैं कि जो ईश्वरीय ज्ञान का दान करे, वही सबसे बड़ा दानी है और वही सबसे बड़ा पुण्य करने वाला है।

बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के अनमोल वचन

★ परमानन्दमय जीवन की असली नींव सन्तुलन है। यह ध्यान में रखने से आपका वर्तमान तथा भविष्य निश्चय ही सदा उज्ज्वल रहेंगे।

★ आत्मोन्नति के लिए अधिक से अधिक समय लगायें तो दूसरों की आलोचना करने का समय ही नहीं मिलेगा।

★ शाख से टूटकर गिरे हुए फूल दोबारा नहीं खिल सकते लेकिन यदि जड़े मजबूत हों तो शाखाओं पर नये–नये फूल खिल आएंगे। इसी तरह जीवन वह नहीं जो हमने अभी तक प्राप्त किया बल्कि जीवन वह है जो हम अब भी प्राप्त कर सकते हैं।

★ हमेशा अच्छों का संग करें। पवन का संग पाकर पांव के नीचे रोंदी जा रही धूल भी आसमान को छू लेती है।

★ अज्ञानता के अंधकार में रहकर तय किया गया जीवन सफर, धरती पर बोझ के समान है।

★ हम केवल मानव का तन लिये ही न फिरें बल्कि मानवीय गुणों से युक्त भी हों।

★ अंधेरा रोशनी से ही मिटता है किसी और प्रयत्न से नहीं। इसी तरह बंधनों से निजात परमात्मा को जानकर ही मिलती है।

★ परमपिता परमात्मा को जानकर ही विश्व शान्ति सम्भव है। महापुरुषों, गुरुओं, अवतारों के पदचिन्हों पर चलकर ही कल्याण सम्भव है। मानवता को अध्यात्मिकता से ही बचाया जा सकता है।

★ भक्त हर हाल में दातार के रंग में रहता है, उतार–चढ़ाव का असर ग्रहण नहीं करता बल्कि हर हाल में खुश रहता है।

★ हीरे के गुण ही अपने आप में उसको कीमती बनाते हैं। भक्त भी कर्म के द्वारा बोलता है। सबसे असरदायक बोल कर्म ही हुआ करता है।

★ यदि आप किसी सन्त–महात्मा को सद्गुरु स्वरुप समझकर सेवा सम्मान करते हैं तो उसकी रसना से जो आशीर्वाद निकलता है, उसमें गुरु शामिल होता है।

★ अंधकार और प्रकाश की भांति अभिमान और ज्ञान भी इकट्ठे नहीं हो पाते।

सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी के दिव्य वचन

★ सेवा सिर्फ सेवा भावना के साथ होती है।

★ प्रेम और मित्रता में अगर और मगर नहीं होता।

★ सन्तजन सारे संसार के भले की याचना करते हैं।

★ निराकार–प्रभु द्वारा प्रदत्त जीवन में हमारे दिल में सबके लिए प्यार हो।

★ मन की सुन्दरता से ही सबको प्रभावित किया जा सकता है।

★ सुन्दर व्यावहारिक जीवन से मिशन की शिक्षाओं को उजागर करें।

★ निरंकार का हमारे अन्दर इतना भय हो कि हमसे कोई गलती न हो।

★ एक प्रभु से जुड़कर ही 'सारा संसार–एक परिवार' का भाव साकार होगा।

★ शहंशाह जी वाला 'सत्–वचन' युग परस्पर सहयोग की भावना से ही आयेगा।

★ अगर हम बाबा जी (बाबा हरदेव सिंह जी महाराज) से प्यार करते हैं तो आओ कसम खाएं कि हम सब मिलजुलकर प्यार से रहें।

★ धोखा खाने वाला तो सम्भल जाता है परन्तु धोखा देने वाला सम्भल नहीं पाता क्योंकि उसके अन्दर अपराध बोध बना रहता है।

★ ज्ञान को कर्म में ढालकर ही जीवन में सकारात्मक भावों को मजूबत किया जा सकता है।

★ ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने के बाद जब गुरमत की दृष्टि मिलती है तो हमें अंग–संग व हर व्यक्ति में प्रभु का रूप ही दिखाई देता है।

★ हर एक महापुरुष को स्वयं को इस मिशन का रोशन–मीनार बनना है। रोशन–मीनार बनने के लिए किसी पद–प्रतिष्ठा की जरूरत नहीं है।

★ हमें अपने आप पर ही अपना ध्यान केन्द्रित रखना है। कोई क्या कर रहा है? क्या नहीं कर रहा? उसकी तरफ ध्यान ना दें। हम गुरमत की मर्यादा में रहते हुए अपना जीवन जी पा रहे हैं कि नहीं, सिर्फ इस पर ध्यान दें।

संग्रकर्ता : श्रीराम प्रजापति

कविता : गफूर 'स्नेही'

दिसम्बर की सुनो

दिसम्बर माह की सुन लो बात,
साल की है ये आखरी पांत।
दिला रहा है हमको याद,
साल खतम है मेरे बाद।।

जाता समय मांगे हिसाब,
गलती का दीजिए जवाब।
वरना नहीं मिलेगी माफी,
हो न कोई भी नाइंसाफी।।

समय पढ़ने का है पढ़िए,
उन्नति पथ पर आगे बढ़िए।
नहीं चलो तो तय है हार,
समय खोलता प्रगति द्वार।।

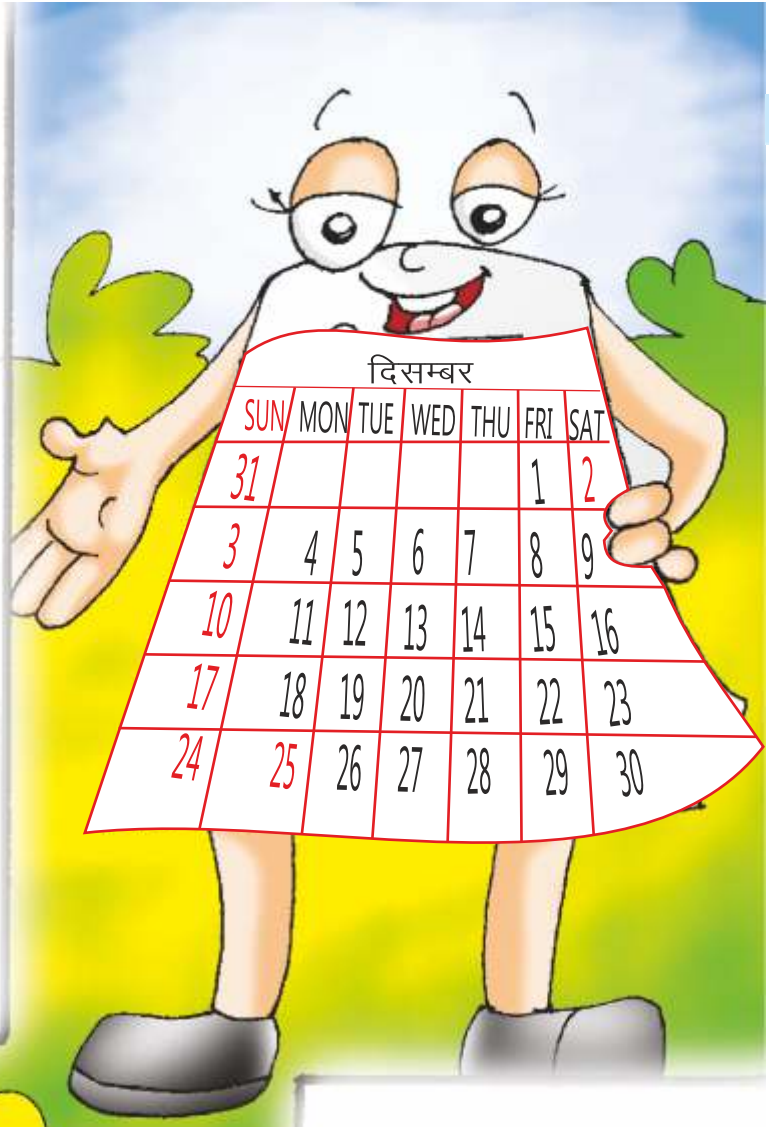

जिसने की है तैयारी,
हिम्मत कभी नहीं हारी।
इम्तिहान में उसकी जीत,
समय की यह रही है रीत।।

विदा साल की तुम ले लो,
नये साल खुशी से खेलो।
समय की कीमत पहचानो,
कहा बड़ों का नित मानो।।

सादगी की मूर्ति : डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

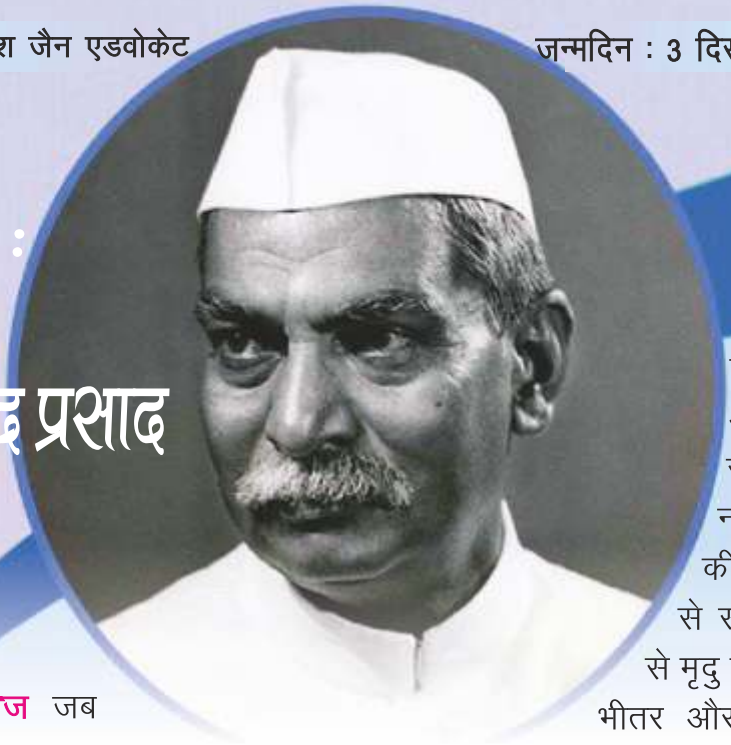

आज जब देश में सिद्धान्तों और मूल्यों की राजनीति अपनी अंतिम सांसे गिन रही है और चापलूसी, तड़क–भड़क, भ्रष्टाचार, सिद्धान्त–हीनता, स्वार्थ आदि तत्व हमारी राजनीति के स्थायी भाव बनते जा रहे हैं, राजनीति अब 'मिशन' न होकर 'प्रोफेशन' बनती जा रही है। ऐसे दौर में राजेन्द्र बाबू की याद एक सुखद अहसास की तरह लगती है। भारत जैसे विशाल गणतन्त्र के इस प्रथम राष्ट्रपति की मौलिक सादगी और अपनी मिट्टी की गंध से महकता, सरल व्यक्तित्व सचमुच आज के युग में एक दुर्लभ वस्तु बनकर रह गया है।

राजेन्द्र बाबू के व्यक्तित्व को परिभाषित करते हुए तत्कालीन वायसराय लॉर्ड लिनथिनगो ने कहा था– डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद न तो बेर की तरह ऊपर से मीठे और अन्दर से सख्त हैं और न ही बादाम की तरह ऊपर से सख्त व अन्दर से मृदु हैं। वस्तुतः वह भीतर और बाहर दोनों तरफ से अंगूर की तरह मृदु, मीठे और मधुर हैं।

यह सन्त राजनेता बिहार के सारण जिले के छोटे से गाँव जीरादेई में 3 दिसम्बर 1884 को जन्मा। राजेन्द्र बाबू बचपन से ही विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने अपने शैक्षणिक जीवन की हर परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। आत्म–विश्वास और स्वाभिमान की जीवन्त प्रतिमूर्ति राजेन्द्र बाबू में ये गुण जन्मजात थे।

राजेन्द्र बाबू ने वकालत की परीक्षा सर्वोच्च अंकों में उत्तीर्ण कर कलकत्ता हाईकोर्ट में वकालत प्रारम्भ की। अपनी प्रतिभा के बल पर उन्होंने वकालत के क्षेत्र में बहुत प्रसिद्धि और कीर्ति हासिल की। उन्होंने वकालत के पेशे में भी कभी अपने सिद्धान्तों और मूल्यों से समझौता नहीं किया। शुद्ध मानवतावादी दृष्टिकोण और ईमानदारी उनके पेशे का मुख्य आधार बनी रही। सन् 1917 में गाँधी जी के चम्पारण

सत्याग्रह से प्रभावित होकर राजेन्द्र बाबू ने वकालत छोड़ दी और अपना समूचा जीवन गाँधी जी के नेतृत्व में राष्ट्र को समर्पित कर दिया। सन् 1935 में बिहार में आए विनाशकारी भूकम्प में उन्होंने जी–जान से लोगों की सेवा की। राजेन्द्र बाबू तीन बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। सन् 1946 में नेहरु जी के नेतृत्व में गठित अंतरिम सरकार में उन्हें कृषि मंत्री बनाया गया।

जनवरी सन् 1950 को राजेन्द्र बाबू सर्वसम्मति से स्वाधीन भारत के प्रथम राष्ट्रपति चुने गये। देश के सर्वोच्च पद पर चुने जाने के बावजूद उन्होंने सादगी का अपना मूल गुण नहीं छोड़ा। राष्ट्रपति भवन के ऐश्वर्य को वह कभी स्वीकार नहीं कर पाए। उनका सीधा–सादा देहाती किसान–मानस राष्ट्रपति भवन की तड़क–भड़क और तामझाम को हमेशा अपव्यय मानता रहा। राष्ट्रपति भवन में ऊँचे–ऊँचे नर्म गद्दों वाले पलंग उन्हें रास नहीं आए। उन्होंने उन आरामदायक पलंगों को हटवाकर लकड़ी का साधारण तख्त लगवाया और बारह वर्ष तक उसी तख्त पर सोए। राष्ट्रपति चुने जाने पर उनके लिए सिलवाये गये कपड़ों का जब दो सौ पचास रुपये का बिल आया तो वह बेहद परेशान हुए। उनका कहना था कि यह बिल्कुल फिजूलखर्ची है। गाँधीवाद की शिष्य–परम्परा के राजेन्द्र बाबू अनुपम उदाहरण थे। गाँधी जी ने राजेन्द्र बाबू की प्रतिभा को व सादगी को बहुत अच्छी तरह पहचाना। एक बार अपने से मिलने आये युवकों को सम्बोधित करते हुए गाँधी जी ने डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की ओर इंगित करते हुए कहा– ''यही हैं बिहार के राजेन्द्र प्रसाद, जिनका त्याग हमारे लिये प्रेरणा और गौरव की बात है, ये पटना हाईकोर्ट जज की कुर्सी पर बैठने वाले थे, किन्तु इन्होंने देश और समाज के लिए वह पद तो क्या, अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया।'' गाँधी जी अक्सर राजेन्द्र बाबू को 'अजातशत्रु' कहा करते थे, अर्थात् जिसका कोई शत्रु न हो।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रबलतम समर्थक थे। उनके प्रयासों से ही भारतीय संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा मिल सका। राजेन्द्र बाबू की प्रेरणा और प्रयासों से ही संविधान की हिन्दी प्रति तैयार हो सकी। भारतीय राजनेताओं में सम्भवतः राजेन्द्र बाबू ही ऐसे एकमात्र नेता थे, जिन्होंने अपनी आत्मकथा हिन्दी भाषा में लिखी। जेल में लिखी हुई यह आत्मकथा हिन्दी साहित्य की एक अनुपम धरोहर है। राजेन्द्र बाबू सात भाषाओं में पारंगत थे, उन्हें भारतीय भाषाओं से विशेष अनुराग था। संस्कृत उनकी प्रिय भाषा थी। अपने राष्ट्रपतिकाल में उन्होंने दो बार विश्व संस्कृत परिषद के सम्मेलन का उद्घाटन किया और दोनों बार अपना उद्घाटन भाषण शुद्ध एवं परिष्कृत संस्कृत में दिया।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भारत माता के ऐसे सपूत थे, जिन पर राष्ट्र हमेशा गर्व करता रहेगा। उनकी बहुमुखी प्रतिभा, सादगी से सराबोर व्यक्तित्व, सरलता, आत्म–त्याग, पर–दुःख कातरता, राष्ट्र–निष्ठा, लगन, कर्मठता आदि गुण उन्हें एक विराट स्वरूप प्रदान करते हैं।

4.6 अरब वर्ष पहले अस्तित्व में आई थी सौर निहारिका

खगोलविदों ने सौर निहारिका के नए जीवनकाल का आकलन किया है, जिसके मुताबिक हमारी सौर प्रणाली के अस्तित्व में आने के पहले 40 लाख वर्षों के दौरान ही विशाल गैसीय ग्रहों बृहस्पति और शनि का गठन हुआ था।

अनुसंधानकर्ताओं के अनुसार करीब 4.6 अरब वर्ष पहले हाइड्रोजन गैस और धूल से युक्त बादल की प्रक्रिया से सौर निहारिका अस्तित्व में आया था। अब अमेरिका के 'मेसाचुसेट्स प्रौद्योगिकी संस्थान' (एमआईटी) के वैज्ञानिकों और उनके साथियों ने सौर निहारिका के नए जीवनकाल का आकलन किया है। सौर निहारिका के करीब 4.6 अरब वर्ष पहले अस्तित्व में आने से जुड़ा आंकड़ा बहुत अधिक अहम है क्योंकि पूर्व के अध्ययनों के मुताबिक निहारिका का जीवनकाल दस लाख से लेकर एक करोड़ वर्ष के बीच का माना जाता रहा है। इस अनुसंधान का प्रकाशन 'साइंस जर्नल' में हुआ है।

संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

दादाजी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

पेड़ चिंतित होने लगे।
अब क्या होगा दादा?
तुम फिक्र मत करो बिना हत्थे की कुल्हाड़ी से ये हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा।
लकड़हारे के पास बिना हत्थे की कुल्हाड़ी थी। उसने काफी देर तक बहुत परिश्रम किया, मगर कोई लाभ नहीं हुआ।
ओफ्फ! कुल्हाड़ी मारते–मारते मैं तो थक गया, इतने मोटे–मोटे पेड़ों को कैसे काटूं ? मेरे पास तो कुल्हाड़ी भी बिना हत्थे की है।
देखते हैं! अकेला लोहा हमारे सख्त तनों का क्या बिगाड़ेगा?

मैं इस कुल्हाड़ी से इस मोटे पेड़ को काट नहीं सकता। मुझे कुछ और ही सोचना पड़ेगा।

दादा! देखो, वह जा रहा है। आपने ठीक ही कहा था। वह हमारा कुछ नहीं बिगाड़ पाया।

अगले दिन लकड़हारे को एक तरकीब सूझी–
अगर मैं इस कुल्हाड़ी में लकड़ी का हत्था लगा लूं तो मेरा काम आसान हो जायेगा।

वह फिर आ रहा है दादा।
वह हत्था लगी कुल्हाड़ी भी ले आया।
हाँ! लगता है अब हम नहीं बच पाएंगे। हमारी एक लकड़ी तो उसमें जा मिली है।
हाय! इस लकड़ी ने हम सबको मरवा डाला।
लोहे की कुल्हाड़ी में लकड़ी का हत्था न होता तो शायद पेड़ कटने से बच जाते।
आखिर पेड़ की लकड़ी ही पेड़ों की दुश्मन बनी। जब तक लकड़ी की सहायता न मिली लोहे की कुल्हाड़ी पेड़ को काट न पाई थी। पेड़ का एक अंश लकड़ी कुल्हाड़ी से जुड़ गई थी। इसलिए उस लकड़ी ने 'घर का भेदी लंका ढावे' वाला काम किया। अब बेचारे पेड़ कैसे बच सकते थे? इसी प्रकार देश या समाज को अपने गद्दारों से ज्यादा खतरा होता है।
शिक्षा : 'घर का भेदी लंका ढाए।'

कविता : हरजीत निषाद

स्वच्छता फैलायें आओ करें सफाई

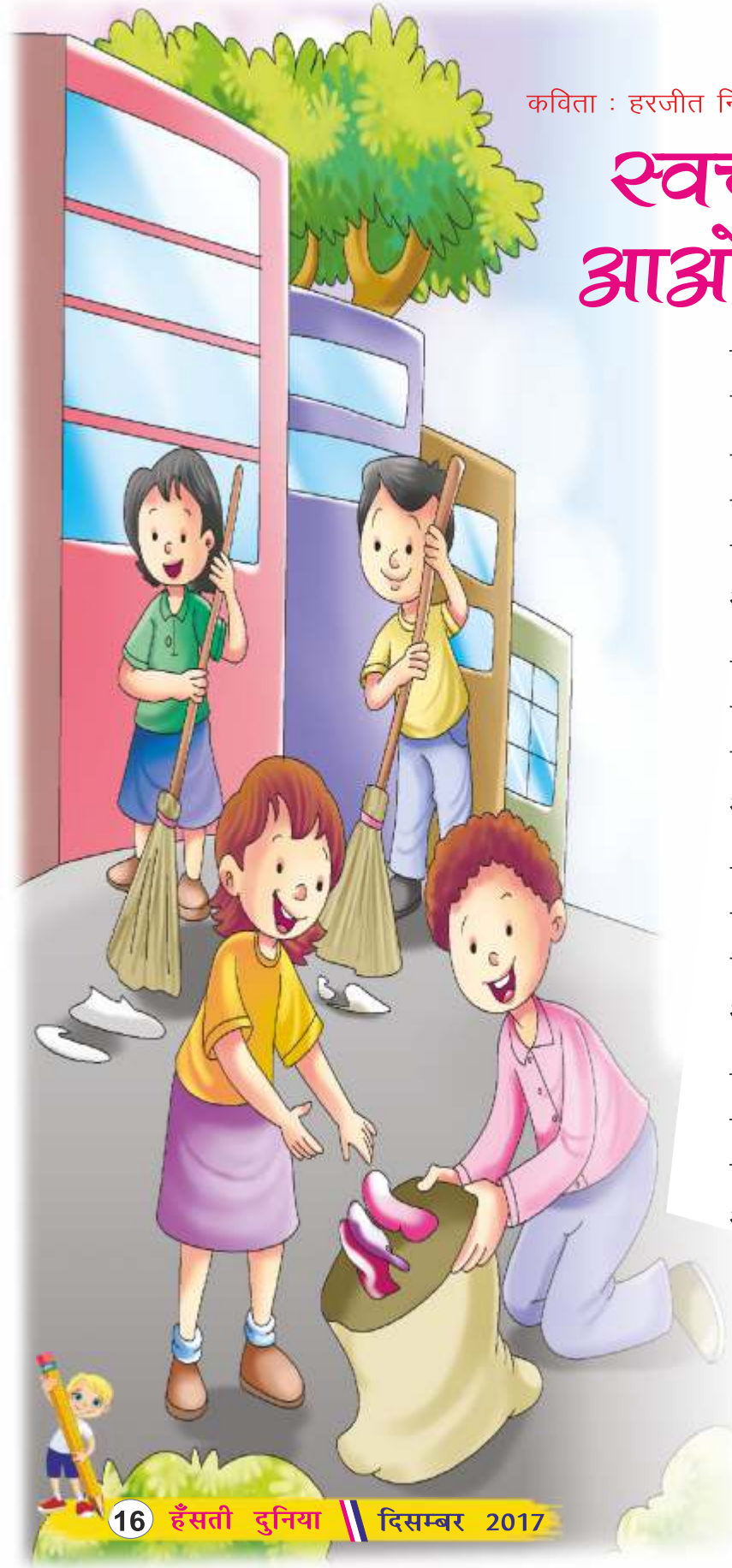

स्वच्छता फैलायें आओ करें सफाई।
दूर करें सारी गन्दगी बुराई।

जल करें साफ जल से है जीवन,
दूर करें जल और वायु प्रदूषण।
इसी में है हर किसी की भलाई,
आओ मिलजुलकर सब करें सफाई।

हवा में धूल धुआं हम न फैलायें,
गन्दा वायुमंडल को और न बनायें।
शुद्ध बनाकर इन्हें करें नेक कमाई,
आओ मिलजुलकर सब करें सफाई।

नदियों नालों में गन्दगी नहीं डालें,
हो सके तो वहाँ से गन्दगी निकालें।
लगायें पौधे तटों पर करें सफाई,
आओ मिलजुलकर सब करें सफाई।

वायु जल ध्वनि को रखें साफ हम,
स्वच्छता रखें सदा करें गन्दगी कम।
स्वच्छ धरती बनाने की ऋतु आई,
आओ मिलजुलकर सब करें सफाई।

क्रिसमस उपहार

कहानी : शिवनारायण

विलियम और जॉन दोनों मित्र थे। दोनों साथ–साथ पढ़ने जाते व साथ–साथ खेलते थे। जॉन वैभव में पल रहा था। उसके पिता उद्योगपति थे। विलियम के पिता न थे उसकी माता 'मेरी' जॉन के घर पर नौकरानी का काम करती थी। वह होनहार बालक था। वह माता का आज्ञाकारी पुत्र था। वह माता को कभी तंग नहीं करता था। वह माता की हर आज्ञा का पालन करने के लिए सदैव तत्पर रहता था। वह अपना अधिकांश समय पढ़ने–लिखने में ही बिताया करता था। वह माता से कभी किसी बात की जिद्द न करता था। वह पढ़–लिखकर बड़ा होकर अच्छी नौकरी करते हुए अपनी माता को सुख पहुँचाना चाहता था।

क्रिसमस का त्यौहार करीब आ रहा था। शहर की बेकरियों में क्रिसमस केक बनने लगे थे। मिठाईयों की दुकाने सजने लगी थीं। कपड़ों की दुकानों पर नये–नये कपड़े खरीदने वालों की भीड़ बढ़ने लगी थी। चप्पलों–जूतों की दुकानों पर भी लोगों की भीड़ ही भीड़ नजर आ रही थी।

स्कूल से लौटते वक्त विलियम राह में पड़ने वाली बेकरी के बाहर खड़ा होकर 'शोकेश' में रखे हुए क्रिसमस केक को प्रायः देखा करता। वह सोचा करता भला ऐसा क्रिसमस केक उसे कैसे मिल सकता है?

आज क्रिसमस का त्यौहार था। चारों ओर क्रिसमस त्यौहार की धूमधाम मची हुई थी। बच्चे खूब पटाखे छुड़ा रहे थे। सब के हाथों में फुलझड़ियाँ जल रही थी। जगह–जगह पर झरझर अनार जल रहे थे। पटाखे शोर मचा रहे थे। राकेट उड़ रहे थे। हर कोई एक–दूसरे को केक बांटते हुए 'हैप्पी क्रिसमस' कह रहा था।

जॉन के द्वार पर क्रिसमस स्टार झूल रहा था। उसके घर का साफ स्वच्छ कमरा रंग–बिरंगे गुब्बारों से सजा हुआ नजर आ रहा था। 'मेरी' को आज जॉन के घर पर काम करना पड़ रहा

था। वह जॉन की मम्मी के साथ तत्परता से हाथ बँटा रही थी। उनकी रसोई घर मीठे व्यंजनों की महक से महक रही थी। जॉन के घर खिड़कियों दरवाजों पर मोमबत्तियां जल रही थीं। जॉन के घर मेहमानों का ताँता लगा हुआ था। जॉन ने नये–नये कपड़े और नये–नये जूते–मोजे पहन रखे थे। मेहमान क्रिसमस केक खाकर क्रिसमस केक की खूब तारीफ कर रहे थे।

काम–धाम से छुट्टी पाकर जब 'मेरी' अपने घर लौटने लगी तब जॉन की मम्मी ने उसे बड़ा–सा पैकेट देते हुआ कहा– यह हमारी ओर से विलियम के लिए क्रिसमस का उपहार है। इसे सहर्ष स्वीकार कर लेना। विलियम बड़ा होनहार लड़का है। वह पढ़–लिखकर आगे जीवन में अवश्य तरक्की करेगा। परिस्थितियों से कुछ नहीं होता है। उसके हौसले बड़े बुलन्द हैं। एक दिन वह कामयाबी की मंजिल पर होगा।

'मेरी' घर लौटकर जॉन की मम्मी द्वारा दिया क्रिसमस उपहार विलियम को देती हुई बोली– तुम्हारे लिए जॉन की मम्मी ने यह क्रिसमस उपहार भिजवाया है। हमें इसे सहर्ष स्वीकार कर लेना चाहिए वरना वे बुरा मान जायेंगी।

विलियम ने क्रिसमस के उपहार का पैकेट खोलकर देखा तो वह ठगा–सा रह गया। वह बोल उठा इतना सुन्दर क्रिसमस उपहार। सच में जॉन की मम्मी–डैडी को अपने बड़प्पन का जरा भी अभिमान नहीं है। भीतर पैकेट में वैसा ही क्रिसमस केक देखकर दंग रह गया जैसा क्रिसमस केक वह शहर में बेकरी के 'शोकेस' के भीतर देखता आया था। साथ ही क्रिसमस पर पहनने को मिला हुआ नया सूट देखकर वह हर्षित हो उठा, वह बोला–शायद उसके नेक स्वभाव के कारण ही जॉन के मम्मी–डैडी उसे इतना मानते हैं। उसने क्रिसमस पर प्रण किया कि अब से वह और भी मेहनत से पढ़ते–लिखते हुए और अच्छे गुण अपनाते हुए जीवन में सफलता हासिल करते हुए बढ़ता रहेगा।

लेख : विद्या प्रकाश

क्या होता है 'स्पेस सूट'

अन्तरिक्ष यात्रा पर जाने वाले यात्रियों की सुरक्षा की दृष्टि से 'स्पेस सूट' सुरक्षा कवच की भांति उपयोगी है तथा यह उनके लिए अनेक प्रकार से लाभकारी है। स्पेस सूट की उपयोगिता और आवश्यकता को समझने से पूर्व पृथ्वी मण्डल के वातावरण के सम्बन्ध में जानना जरूरी है।

पृथ्वी के ऊपर के वातावरण में इसके प्रत्येक वर्गमीटर पर एक बड़ी गाड़ी के बराबर दबाव डालता है। हमें इसका अनुभव इसलिए नहीं होता क्योंकि हमारे शरीर के अन्दर और बाहर यह दबाव एक समान होता है। शरीर के अन्दर तथा बाहर के तापमान और दबाव में भिन्नता होने पर क्या स्थिति उत्पन्न होगी, इसका अन्दाजा एक उदाहरण से लगाया जा सकता है। यदि धातु के एक बर्तन की भीतर की हवा को इसके भीतर खौलते पानी द्वारा या किसी और माध्यम द्वारा बाहर निकाल दी जाए तो बर्तन वायुमण्डलीय दबाव के कारण पिचक जाएगा। इसी प्रकार अन्तरिक्ष में गया एक अप्रतिरक्षित अन्तरिक्ष यात्री न केवल फूल कर मर जाएगा बल्कि उसका खून भी गर्म पानी की भांति उबलने लगेगा। तरल पदार्थ किस तापमान पर उबलता है, वह वाह्य वातारवरणीय दबाव पर निर्भर करता है।

9 किलोमीटर की ऊँचाई पर पानी 74 डिग्री सेंटीग्रेड के तापमान पर उबलने लगता है। 9 किलोमीटर से अधिक ऊँचाई पर खून शरीर से कम तापमान पर उबलने लगता है। शून्य दबाव पर अन्तरिक्ष यात्री का खून एकदम जानलेवा फोम (झाग) में परिवर्तित हो जाएगा।

इस भौगोलिक और वातावरणीय तथ्य को दृष्टि में रखकर अन्तरिक्ष यात्रियों के सूट इस प्रकार डिजाइन किये जाते हैं ताकि उन्हें आकाशीय यात्राओं के दौरान अन्तरिक्ष में विद्यमान विभिन्न प्रकार के खतरों से बचाया जा सके। अन्तरिक्ष जगत के इन खतरों में अत्यधिक तापमान, खतरनाक विकिरण, तीव्रगति से घूमती हुई वस्तुएं तथा शून्य (वैक्यूम) आदि शामिल हैं।

स्पेस सूट जिसे 'मेंसमेनूवरिंग यूनिट' (एम एम य) के नाम से भी जाना जाता है, पहनकर लोग अन्तरिक्ष यात्रा में जाते हैं। इस सूट का कपड़ा परतदार बना होता है। इसमें से हर परत का अपना एक उद्देश्य होता है। भीतरी परतों में से एक तापमान को नियंत्रित करता है। इसे पहनकर अन्तरिक्ष यात्री अन्तरिक्षयान को छोड़ सकते हैं तथा स्वतंत्र रूप से अन्तरिक्ष लोक में उड़ सकते हैं। इसमें ऑक्सीजन गैस के लिए भी आवश्यक व्यवस्था होती है।

प्रत्येक सूट में एक आधारभूत लाइफ सपोर्ट प्रणाली होती है। इसमें आवश्यकतानुसार पर्याप्त मात्रा में पानी तथा ऑक्सीजन रखी जा सकती है। जिनकी सहायता से अन्तरिक्ष यात्री कई घंटों तक अन्तरिक्ष जगत में चहलकदमी कर सकते हैं। स्पेस सूट में लिक्विड कूलिंग तथा वेंटीलेशन प्रणाली होती है।

दरअसल प्रत्येक स्पेस सूट बहुत से अलग–अलग टुकड़ों से मिलकर बना होता है। प्रत्येक टुकड़े को निश्चित आकार के हिसाब से बनाया और तैयार किया जाता है। अन्तरिक्ष की जोखिम भरी यात्रा में जाने वाले व्यक्ति को इन्हीं टुकड़ों से निर्मित ऐसा सूट दिया जाता है जिसमें वह फिट हो सके तथा अपनी यात्रा निरापद और सुरक्षित कर सके।

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

वर्ग पहेली

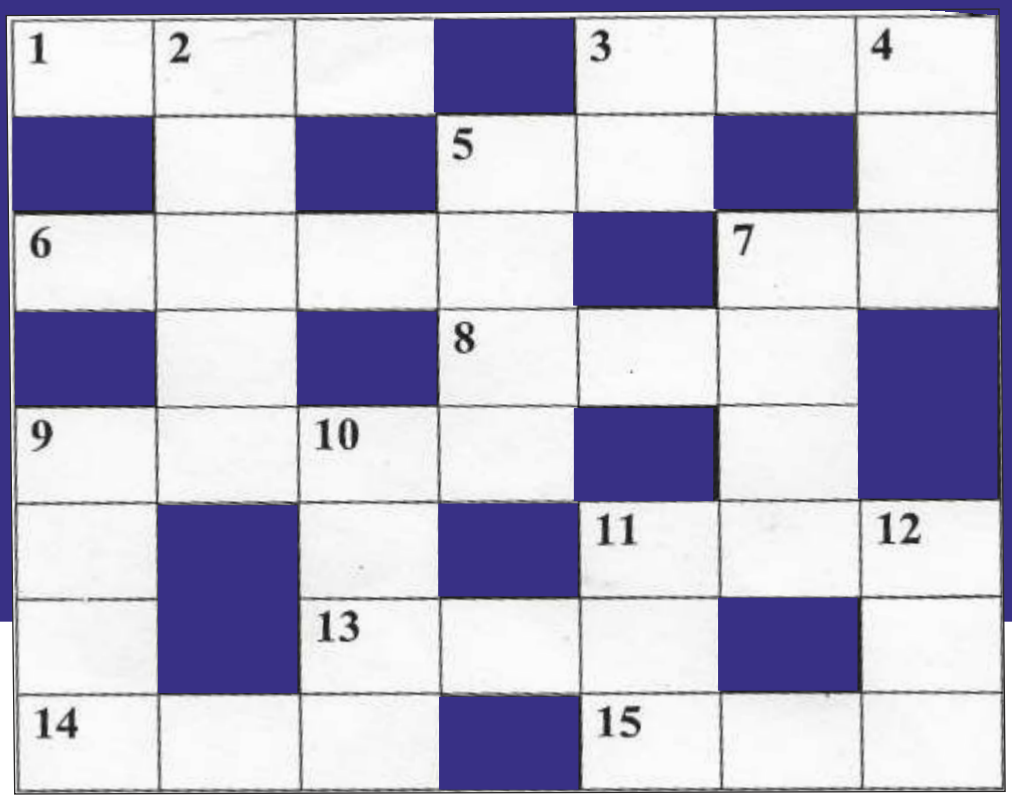

बाएं से दाएं

1. इनमें से जो महाभारत का एक पात्र है : मंथरा, उर्मिला, सुभद्रा, सुमित्रा।
3. ऋषि विश्वामित्र की तपस्या भंग करने वाली अप्सरा।
5. एशियाई देश मालदीव की राजधानी।
6. मुहावरा : उल्टा चोर ..... को डांटे।
7. .... हुआ फल खाना चाहिए (पका/पक्का)।
8. इराक देश की मुद्रा।
9. सबसे छोटा पांडु पुत्र।
11. 'गरबा', 'बगदाद' और 'संगमरमर' शब्दों के तीसरे अक्षरों को मिलाकर बनने वाले एक सूखे मेवे का नाम।
13. रघुपति .... राजा राम, पतित पावन सीता राम।
14. जर्मनी और श्रीलंका में से जो देश यूरोप महाद्वीप में है।
15. शुद्ध शब्द छांटिए : नर्मता/नम्रता।

ऊपर से नीचे

2. जिस स्वतंत्रता सेनानी को सुखदेव और राजगुरु के साथ फांसी पर चढ़ा दिया गया था।
3. मेला का बहुवचन।
4. कालका और शिमला में से जो शहर हरियाणा में है।
5. जिस देश की राजधानी का नाम माले है।
7. पिता के दादा।
9. जिस नदी के किनारे लुधियाना शहर स्थित है।
10. देवर की पत्नी।
11. दो सौ के आधे के आधे से दो ज्यादा।
12. पश्चिम बंगाल की पहली महिला मुख्यमंत्री का नाम .... बैनर्जी है।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में हैं)

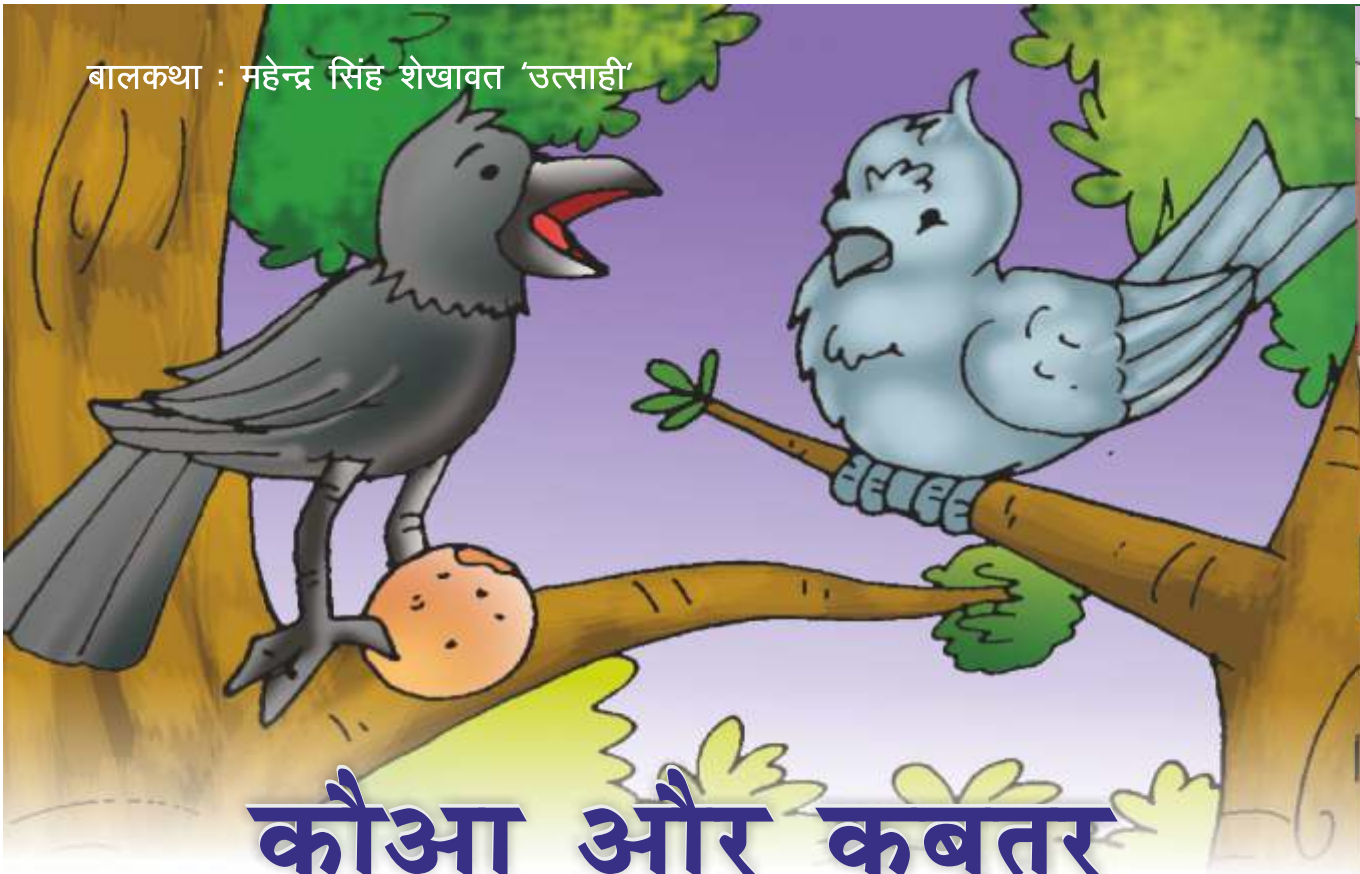

बालकथा : महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

कौआ और कबूतर

एक गाँव के किनारे एक खेत में एक चतुर कौआ और एक भोलू कबूतर रहा करते थे। कबूतर भोला–भाला और सीधा–सादा था जबकि कौआ बहुत चालाक था।

कौए का स्वभाव भी खराब था। वह स्वार्थी और अहंकारी था तथा कभी किसी के सुख–दुख में साथ नहीं देता था जबकि इसके विपरीत कबूतर दयालु और परोपकारी था और सर्वदा दूसरों के सुख–दुख में साथ देता था।

एक दिन कबूतर को खाने के लिए कुछ नहीं मिला। वह भूखा ही इधर–उधर देखता रहा। तभी कौआ एक रोटी लेकर आया तो कबूतर ने सोचा कि सम्भवतः वह थोड़ी बहुत रोटी उसको दे देगा लेकिन कौए ने तो कबूतर से पूछा तक नहीं और चुपचाप पूरी रोटी खा गया।

थोड़े दिनों बाद एक दिन कौए को खाने के लिए कुछ नहीं मिला और कबूतर को रोटी मिल गई थी।

भूख से व्याकुल कौए ने जैसे ही कबूतर के मुँह में रोटी देखी तो वह झट से कबूतर के पास आकर बोला– मित्र, आज मेरी तबीयत बहुत खराब हो रही है, अब तो उठने–बैठने की हिम्मत भी नहीं रही है, ऐसे लगता है, जैसे मेरे पेट में कोई बार–बार चिल्ला रहा हो।

–मैं कहीं से दवाई लाकर दूँ तुम्हें।– कबूतर ने बड़ी सहजता से पूछा।

–नहीं, नहीं मित्र। दवाई की कोई आवश्यकता नहीं है। मेरी पीड़ा तो रोटी से

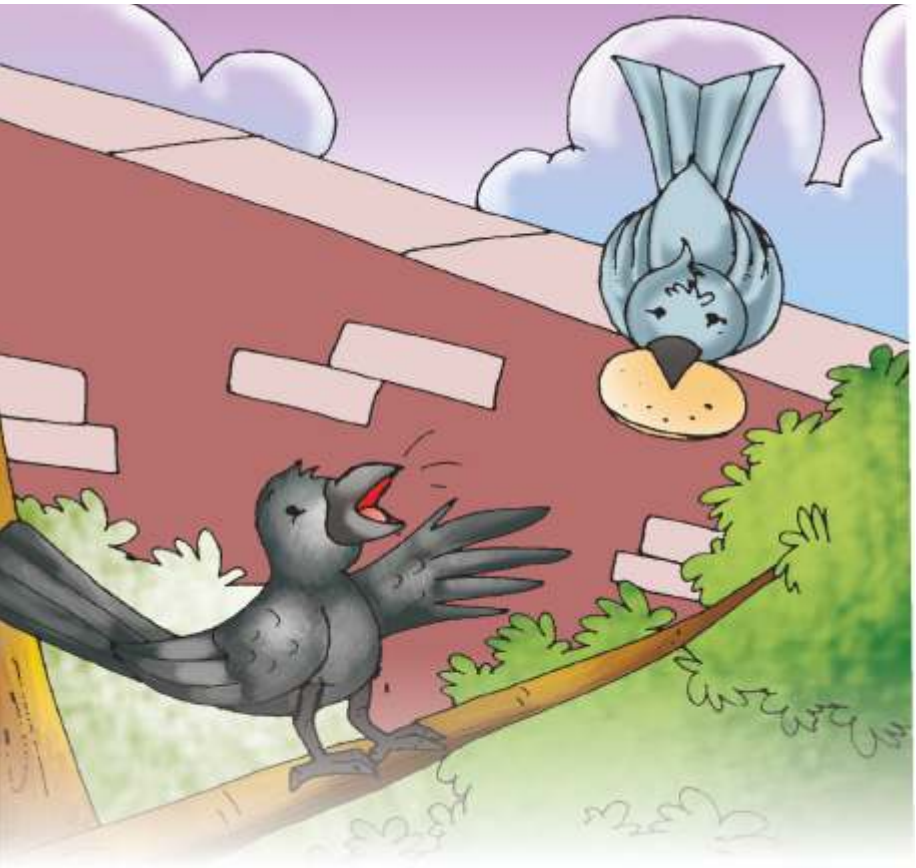

दूर हो सकती है। लेकिन तुम्हारे पास तो एक ही रोटी है, इसे तुम खाओगे या मैं? कौए ने बड़ी चतुराई से कहा।

भोला–भाला कबूतर कौए की बातों में आ गया और अगले ही पल वह अपनी रोटी उसे देते हुए बोला– लो मित्र, पहले तुम खा लो यह रोटी ताकि तुम्हारी पीड़ा दूर हो सके। मैं तो भूख को सहन कर लूंगा।

कौआ तो बस इसी की ताक में था। वह झट से कबूतर की रोटी को पकड़ लिया और मन ही मन बहुत खुश होने लगा कि उसने कितनी चालाकी से कबूतर की रोटी प्राप्त कर ली।

उनके पास ही बैठा कुत्ता यह सब देख रहा था जो पहले से ही रोटी पाने की फिराक में था लेकिन दोनों पक्षियों की नजरों में वह नहीं आया था।

जैसे ही कौए ने रोटी पकड़ी, उसने उछलकर कौए को धर दबोचा।

कौआ चिल्लाता ही रह गया– अरे मैंने चालाकी से यह रोटी प्राप्त की है, इसे ले लो मुझे छोड़ दो...।

लेकिन अब क्या था। दूसरों के भोलेपन का नाजायज फायदा उठाने की सजा से वह बच नहीं सका।

कबूतर यह सोचते हुए उड़ गया था कि 'ईश्वर जो भी करता है, अच्छा ही करता है। यदि रोटी मेरे पास होती तो मृत्यु सुनिश्चित थी लेकिन कौए ने मेरे साथ धोखा किया इसलिए यह सजा उसे मिल गई।'

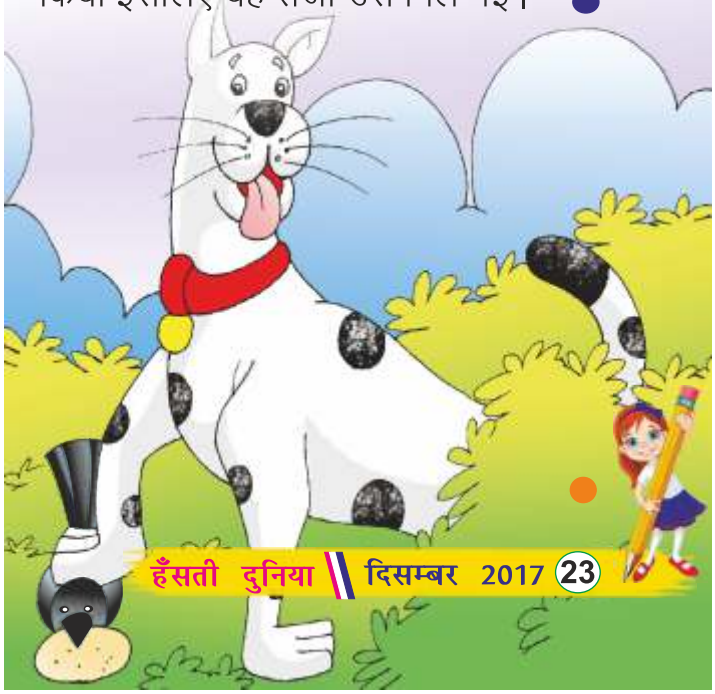

लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

मणिपुर का राजकीय पशु

संगाई

संगाई दक्षिणी एशिया का एक दुर्लभ हिरन है। इसे बर्मी में थामिन और मणिपुरी भाषा में संगाई कहते हैं। दक्षिणी एशिया में इस प्रजाति के तीन हिरन पाये जाते हैं। पहला थाईलैंड का संगाई, यह थाईलैंड के साथ ही वियतनाम और हैनान द्वीप पर भी पाया जाता है। दूसरा बर्मा का संगाई। यह बर्मा के साथ ही मलाया में भी देखने को मिलता है और तीसरा मणिपुर का संगाई। किसी समय सभी जातियों के संगाई हिरन पूर्व में वियतनाम से लेकर पश्चिम में मणिपुर तक काफी विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए थे और बहुत बड़ी संख्या में पाये जाते थे, किन्तु वर्तमान में संगाई विश्व का सर्वाधिक दुर्लभ और एक सीमित क्षेत्र में पाया जाने वाला हिरन बन गया है। इसकी तीनों जातियां विलुप्ति के कगार पर हैं। इनमें से मणिपुर के संगाई की स्थिति सर्वाधिक दयनीय है। थाईलैंड के जंगलों में संगाई की एक चौथी जाति भी पायी जाती थी, किन्तु उचित संरक्षण के अभाव में यह सन् 1932 से 1937 के मध्य विलुप्त हो गयी।

मणिपुर का संगाई भारत में केवल मणिपुर राज्य के एक बहुत छोटे से भाग में पाया जाता है। यह मणिपुर की लोगतक झील के दक्षिण–पूर्व में केईबुल लमजाओ के दलदल वाले भाग में रहता है तथा घने जंगलों और ऊँचे पर्वतीय जंगलों में कभी नहीं जाता। यह सदैव झुण्ड में रहना पसन्द करता है। किसी समय इसके 200 से 300 तक के झुण्ड सरलता से देखने को मिल जाते थे। स्वतंत्रता पूर्व भी इसके 10 से 20 तक के अनेक झुण्ड देखे गये, किन्तु अब 3–4 से अधिक संगाई हिरनों के झुण्ड देखने को नहीं मिलते। सन् 1952 में तो मणिपुर शासन ने इसे विलुप्त घोषित कर दिया था, किन्तु इस घोषणा के कुछ समय बाद अचानक एक दिन स्थानीय लोगों ने तीन–चार संगाई देखे और उन्होंने इसकी सूचना मणिपुर के स्थानीय अधिकारियों को दी। इसके बाद इसके संरक्षण और विकास का कार्य आरम्भ किया गया, किन्तु इस कार्य में सन् 1975 तक कोई उल्लेखनीय सफलता नहीं मिली। विख्यात भारतीय जीव वैज्ञानिक श्री रनजीत सिंह द्वारा सन् 1975 में किये गये एक सर्वेक्षण के अनुसार इनके प्रमुख निवास मणिपुर के केईबुल लमजाओ के दलदल वाले भाग में 35 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में एक टापू पर इनकी संख्या 14 शेष रह गयी थी।

संगाई एक सुन्दर और शानदार हिरन है। दूर से देखने पर यह सांभर जैसा दिखाई देता है, किन्तु यह सांभर से पूरी तरह भिन्न होता है और आकार में सांभर से कुछ छोटा होता है। संगाई की कंधों तक की ऊँचाई 100 सेन्टीमीटर से 120 सेन्टीमीटर तक पूँछ सहित शरीर की लम्बाई 120 सेन्टीमीटर से 150 सेन्टीमीटर तक एवं वजन 90 किलोग्राम से लेकर 125 किलोग्राम तक होता है। इसकी त्वचा रूखी एवं हल्की होती है। नर संगाई का रंग कालापन लिये हुए गहरा बादामी या भूरा होता है। संगाई मौसम के अनुसार अपना रंग बदलता है। सर्दियों का गहरे भूरे रंग का नर संगाई गर्मियों में बादामीपन लिये हुए हल्के भूरे रंग का हो जाता है। नर संगाई के समान ही मादा का रंग भी सर्दियों के मौसम में गहरा हो जाता है और गर्मियों के मौसम में पुनः हल्का पीलापन लिये हुए बादामी हो जाता है। संगाई के पेट एवं शरीर के नीचे का भाग ऊपर के भाग की तुलना में हल्के रंग का होता है तथा कभी–कभी इसकी आँखों के पास सफेद निशान देखने को मिलते हैं। इसके कानों के भीतर का भाग हल्का गुलाबीपन लिये हुए सफेद तथा मुँह व नथुनों के पास का कुछ भाग कालापन लिये हुए गहरा कत्थई होता है। नर संगाई की गर्दन पर बालों की छोटी–सी अयाल होती है तथा इसकी गर्दन मादा की गर्दन से काफी लम्बी होती है।

बर्मा के संगाई की शारीरिक संरचना मणिपुर संगाई के समान होती है, किन्तु इसके मृगशृंग (एन्टलर्स) मणिपुर संगाई से बड़े होते हैं। मणिपुर संगाई की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें मादा के पैरों का निचला खुरों वाला भाग बालों वाला न होकर उस पदार्थ का होता है जिसके सींग होते हैं। खुरों की संरचना इस प्रकार की होती है कि यह दलदल वाले भागों में सरलता से भाग सकती है। मादा संगाई हमेशा ठुमक–ठुमककर चलती है। इसीलिये संगाई को नर्तक हिरन (Dancing Deer) भी कहते हैं।

संगाई के मृगशृंग विश्व के सभी हिरनों से भिन्न होते हैं। इन्हीं मृगशृंगों की सहायता से इसे सरलता से पहचाना जा सकता है। इसके मृगशृंग बाहर की ओर निकले हुए एवं मस्तक के आधार से समकोण बनाते हुए होते हैं तथा आधार से कुछ दूरी तक शाखा रहित होते हैं। इनमें शाखाओं का विकास ऊपर उठने के बाद होता है। संगाई के मृगशृंगों की बाहरी शाखाओं से अनेक छोटी–छोटी शाखाएं निकलती हैं। इनकी संख्या 4 से 12 तक हो सकती है। इसके दोनों मृगशृंगों का विकास भी असमान ढंग से होता है। संगाई के मृगशृंग गोलाई में बहुत घूमे हुए होते हैं। इसमें बड़ी आयु के नर संगाई के मृगशृंगों का घुमाव एक स्पष्ट कोण बनाते हुए होता है जबकि नववयस्क नरों के मृगशृंग गोलाई में अंग्रेजी के 'सी' के समान घूमे हुए होते हैं। इसके प्रत्येक मृगशृंग की पहली शाखा विशेष रूप से गोलाई लिये हुए होती है तथा बगलों से देखने पर धनुष की तरह मालूम पड़ती है। इसीलिये संगाई को मस्तक शृंग हिरन (Brow Antlered Deer) कहते हैं।

संगाई के मृगशृंग देखने में बड़े सुन्दर होते हैं। ये मोटे और चपटे होते हैं तथा इनकी लम्बाई शाखा के एक सिरे से लेकर मुख्य शाखा के सिरे तक नापी जाती है। संगाई के मृगशृंगों की लम्बाई 60 सेन्टीमीटर से 100 सेन्टीमीटर तक होती है। इनमें 90 सेन्टीमीटर से अधिक लम्बे मृगशृंगों वाले संगाई अच्छे माने जाते हैं। भारत में अभी तक 107 सेन्टीमीटर मीटर तक लम्बे मृगशृंगों वाले संगाई देखे गये हैं। विश्व में सबसे अधिक लम्बे मृगशृंगों का कीर्तिमान 113 सेन्टीमीटर बर्मा के संगाई का है।

संगाई मुख्य रूप से दिवाचर है अर्थात् दिन में भोजन करता है और रात्रि के समय आराम करता है। संगाई प्रायः छोटे–छोटे समूहों में सूर्योदय के पूर्व ही चरना आरम्भ कर देता है। यह गर्मियों की कड़ी धूप में घने वृक्षों की छाया में अथवा किसी सुरक्षित छायादार स्थान पर आराम करता है और धूप कम होते ही पुनः चरना आरम्भ करता है तथा सूर्यास्त तक चरता है। इसे खुले मैदानों, झाड़ीवाले समतल वनों, निचले दलदल वाले कम घने जंगलों में चरना बहुत पसन्द है। सांभर के समान संगाई भी जमीन पर उगने वाली घास चरने के साथ ही वृक्षों की पत्तियां तथा मुलायम कोंपलें आदि तोड़कर खाता है, किन्तु इसका प्रमुख भोजन दलदल में तैरते हुए भूखण्डों पर उगने वाली एक विशेष प्रकार की घास, जंगली चावल तथा कुछ जंगली वनस्पतियां हैं। मणिपुर में इन तैरते हुए विशाल भूखण्डों को फुम्दी (Phumdi) कहते हैं। इसका निर्माण विभिन्न प्रकार के पदार्थों मिट्टी तथा वनस्पतियों से मिलकर होता है। ये 30 सेन्टीमीटर से लेकर 120 सेन्टीमीटर तक मोटे होते हैं तथा मौसम के अनुसार तैरते हैं। फरवरी–मार्च के महीनों में गर्मी के कारण आसपास की जमीन सूख जाती है तथा तैरते हुए भूखण्डों की जमीन भी सूखकर कठोर हो जाती है। इन महीनों में ये नीचे की ठोस जमीन से चिपक जाते हैं और वर्षा आरम्भ होने पर ये तीन–चार दिन पानी में डूबे रहते हैं और फिर स्वतः ऊपर उठकर तैरने लगते हैं। बाढ़ के दिनों में तैरने वाले भूखण्ड चारों ओर से पानी से घिर जाते हैं तथा पानी में डूब से जाते हैं। अतः संगाई ऊँचाई वाले भागों में चला जाता है। संगाई के लिये बाढ़ सदैव घातक होती है। सन् 1966 की भयानक बाढ़ में बहुत से तैरने वाले भूखण्ड बह गये थे और इसके साथ ही आधे से अधिक संगाई भी काल कवलित हो गये थे। तैरने वाले भूखण्डों का वर्षा से सीधा सम्बन्ध है। तीन–चार वर्ष वर्षा न होने अथवा कम वर्षा होने पर ये भूखण्ड सूख जाते हैं और पास की भूमि का स्थायी अंग बन जाते हैं और इस प्रकार संगाई का निवास स्थल छोटा होता जाता है। तैरने वाले भूखण्ड जितने पुराने होते हैं, उतने ही मोटे, भारी और मजबूत होते हैं। इन्हीं भूखण्डों पर उगने वाली घासें, झाड़ियां तथा अन्य वनस्पतियां ही संगाई का प्रमुख भोजन हैं। तैरते हुए भूखण्डों पर उगने वाली कोमबोंग नामक घास तो इसका जीवन है। कोमबोंग घास की मणिपुर में सदैव कमी रहती है क्योंकि यह मणिपुर में पाये जाने वाले पालतू भैंसों का भी मनपसन्द भोजन है।

संगाई के मृगशृंग अगस्त में गिर जाते हैं और नवम्बर–दिसम्बर में पुनः निकलना आरम्भ हो जाते हैं व मार्च–अप्रैल में पूरे निकल आते हैं।

जन्म के समय बच्चे के शरीर पर सफेद रंग की चित्तियां होती हैं जो बड़े होने पर धीरे–धीरे समाप्त हो जाती हैं। नर बच्चे के मृगशृंग दूसरे वर्ष निकलना आरम्भ हो जाते हैं तथा दो से ढाई वर्ष के मध्य यह वयस्क हो जाता है। इसकी आयु में वृद्धि के साथ ही इसके मृगशृंगों में भी निखार आता–जाता है। सात वर्ष के नर संगाई के सींग सबसे सुन्दर होते हैं। इसके बाद इसके जीवन का उतार आरम्भ हो जाता है।

कविता : भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

सुन भाई! सुन

सुन भाई! सुन, सुन भाई! सुन।
सुन करके मेरी बातें गुन।।

मानव–तन की महिमा जान,
अपने जीवन को पहचान।
करे कर्म जो, धर्म–प्रधान,
जग में मानव वही महान।
मन का कर उत्थान सदा,
सद्भावों के मोती चुन।
सुन भाई! सुन, सुन भाई! सुन।।

मानवता ही मानव–धर्म,
जाने मानवता का मर्म।
कर तू सत्य–न्यायमय कर्म,
यह ही मानवता का वर्म।
भारत माँ का वही सपूत,
जिसमें देशभक्ति की धुन।
सुन भाई! सुन, सुन भाई! सुन।।

सभी सुखों का जो है सार,
वह है सच्चा प्रेम–प्रसार।
तू करके सेवा–उपकार,
कर ले जीवन का श्रृंगार।
प्रेमामृत का कर तू पान,
द्वेष–अग्नि में मत जल–भुन।
सुन भाई! सुन, सुन भाई! सुन।।

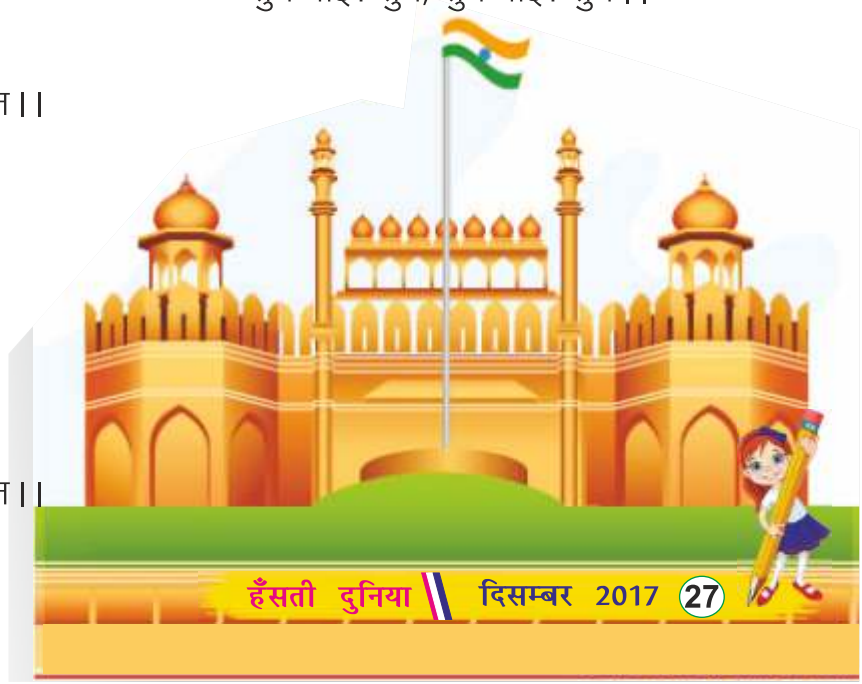

जानकारी : राधा नाचीज़

दूरबीन की खोज

बच्चों! तुमने दूरबीन (टेलिस्कोप) तो देखी ही होगी? आमतौर पर इसका उपयोग जहाजों में होता है। दूरबीन से ही हम चाँद और सितारों को देखकर उनके बारे में जान सके हैं। इसको बनाने का श्रेय इटली के वैज्ञानिक गैलीलियो को है।

गैलिलियो गैलिली विश्व के आविष्कारकों में प्रकाश की गति सम्बन्धी नियम एवं दूरबीन के आविष्कार के लिए जाने जाते हैं। विश्व को उन्होंने अपनी इस महत्वपूर्ण खोज के द्वारा जो महान देन दी, वह अमूल्य है। गैलिलियो गैलिली को अपने आविष्कार के लिए प्राणों का बलिदान भी देना पड़ा था। आइये, गैलिलियो गैलिली की जीवनी से आपको रुबरु करवाते हैं।

गैलिलियो गैलिली का जन्म 15 फरवरी 1564 को इटली के पीसा नामक शहर में हुआ था। उनके पिता का नाम विनसेंजो गैलिली था जो एक संगीतज्ञ थे। सात भाई–बहनों में गैलिलियो गैलिली सबसे बड़े थे। उनका परिवार अत्यंत गरीब था। बचपन की शिक्षा उन्होंने फ्लोरेंस नगर में प्राप्त की। जब बड़े हुए तो उन्होंने अपने पिता के काम में हाथ बंटाया। उनके पिता ने उन्हें प्रतिभावान जानकर उनकी पढाई पुनः शुरू करा दी।

एक बार गैलीलियो वीनस गया। उसे वहाँ पता लगा कि बैल्ज़ियम के किसी व्यक्ति ने एक ऐसा यन्त्र बनाया है जिससे दूर की वस्तुएं बड़ी दिखाई देती हैं, पर त्रुटि यह थी कि उसमें हर वस्तु उल्टी नज़र आती थी। गैलीलियो यह सुनकर दूरबीन बनाने की तैयारियां करने लगा। उसने महीनों की कड़ी मेहनत के बाद दूरबीन के दो शीशे तैयार कर लिये और उसे ताँबे की बनी हुई एक नलकी के सिरों में फिट कर दिया। यह थी संसार की पहली सफल दूरबीन। इसमें कई–कई मील दूर की वस्तुएं बड़ी दिखाई देती थीं तथा साफ और सीधी नजर आती थी। इसके बाद वह इसे और उत्तम बनाने का प्रयत्न करता रहा।

अप्रैल 1597 में गैलिलियो ने एक ऐसी दूरबीन बनाई जो 32 गुना विशाल देख सकती थी। अपनी दुकान में गैलिलियो ने 1609 में उसकी बिक्री आरम्भ कर दी। उस समय जो दूरबीन बिक रही थी वह कुछ दूरी तक देखने के काम आती थी। इस दूरबीन ने यह साबित किया कि सूर्य में धब्बे है। आकाशगंगा तारों का झुण्ड है। बृहस्पति ग्रह के कई उपग्रह हैं।

अपनी दूरबीन द्वारा आकाश में होने वाली चमत्कारिक घटनाओं को गैलिलियो ने बताकर खगोल विद्या के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण सिद्धांत प्रतिपादित किये जिसमें ध्वनि, प्रकाश ,रंग तथा ब्रह्मांड की बनावट पर तर्कपूर्ण विचार शामिल थे। 1611 में दूरबीन के आविष्कार के लिए गैलिलियो को सम्मानित किया गया था।

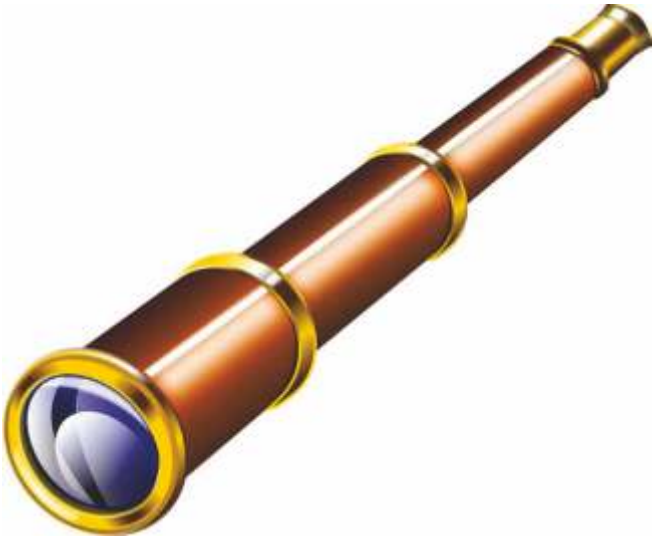

गैलीलियो ने लगभग 200 टेलिस्कोप बनाये और उन्हें विभिन्न शिक्षण संस्थाओं को खगोलीय प्रेक्षणों के लिए दान कर दिया। उन्होंने इटली की ही भाषा में अपनी किताब लिखी ताकि आम आदमी भी उसे पढ़ सके। गैलीलियो ने चर्च के विचारों का खंडन किया था, इसलिए उन्हें न्यायिक जाँच और कई अन्य यातनाओं का सामना करना पड़ा। गैलीलियो वैज्ञानिक सोच के एक महान प्रतिपादक थे। सही मायनों में गैलीलियो को आधुनिक विज्ञान का पिता कहा जा सकता है। गैलीलियो टेलिस्कोप के अपने आविष्कार के कारण दुनिया में प्रसिद्ध हुए। वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने बृहस्पति ग्रह के 4 चंद्रमाओं का पता लगाया। साथ ही सबसे पहले सूर्य के धब्बों और शुक्र ग्रह की कलाओं को देखा। अपने परीक्षणों के दौरान उन्होंने यह निष्कर्ष निकला की सभी ग्रह, सूर्य की परिक्रमा करते हैं।

कविता : कमलसिंह चौहान

सूरज का पाठ

सुबह का देखो सूरज आया,
उसने अपना पाठ पढ़ाया।
बच्चों से भी हँसकर मिलता,
कलियों को खिलना सिखलाया।

पक्षी उड़ते दूर गगन में,
मस्त हुए सब अपनी लगन में।
चिड़िया तोते कबूतर उड़ते,
आजादी का गीत सुनाया।

भेद किसी से नहीं करना,
मीठी वाणी बातें करना।
दिल न दुखे कभी किसी का,
हिल मिलकर रहना सिखलाया।

सूरज चढ़ता आगे बढ़ता,
बच्चों से भी कहता चलता।
बाँटो प्रेम लुटाओ खुशबू,
लेकर भी देना सिखलाया।

कविता : गफूर 'स्नेही'

सर्दी

ढूंढों गर्म कपड़े ऊनी वर्दी,
आने वाली है अब सर्दी।

कोहरा ढक लेगा आसमान,
सूरज चंदा ढकने का ये सामान।

सुबह सूरज उगेगा लेट,
दिन जल्दी थक जाएगा बैठ।

शीत लहर में होगी छुट्टी,
दोस्ती धूप से छांव से कुट्टी।

बच के रहना नजला जुकाम,
छींक खांसी जीना हराम।

प्रेरक प्रसंग : ईलू रानी

हिम्मत न हारी

उस नौजवान को तरह–तरह की पुस्तकें पढ़ने का बड़ा शौक था। अपने छात्र जीवन में वह अक्सर अपने मित्रों से पुस्तकें मांगकर पढ़ाई किया करता। दरअसल पुस्तकें खरीदना उसके लिए सम्भव नहीं था क्योंकि उसके पास पैसे नहीं थे लेकिन था बड़ा ईमानदार और बुद्धिमान। कई बार ऐसा भी हुआ उसने भूखे रहकर पढ़ाई की और भोजन का पैसा बचाकर पुस्तकें खरीदी। यूं वह हर वर्ष क्लास में अच्छे नम्बरों से पास होता था।

एक दिन उस नौजवान ने मन में सोचा– पैसा तो पास में है नहीं अब आगे की पढ़ाई कैसे होगी? तभी उसके मन में विचार कौंधा। उसने अपनी समस्या अपने एक मित्र को बताई। मित्र ने कहा– जूनागढ़ के राजा अच्छे नम्बरों से पास होने वाले छात्रों को अपने खर्चे से विदेशों में पढ़ाई के लिए भेजते हैं।

मित्र के पिता ने यह बात जूनागढ़ के राजा को बताई तो उन्होंने तुरन्त उस नौजवान को बुलाया और कहा– 'तुम उच्च पढ़ाई के लिए लन्दन जाओ, तुम्हारी पढ़ाई की व्यवस्था हो जाएगी।'

वह नौजवान खुशी–खुशी लन्दन जाकर पढ़ाई करने लगा। तीन–चार माह तक तो राजघराने की सहायता समय पर मिली, लेकिन उसके बाद सहायता मिलना बंद हो गई। अब नौजवान के सामने दो समस्या थी, एक तो पेट भरना दूसरा पढ़ाई का खर्च। फिर भी नौजवान ने हिम्मत न हारी। इधर–उधर छोटा–मोटा कार्य करके कुछ पैसों का जुगाड़ कर लिया करता।

नौजवान पैसों की तंगी के कारण सादे कपड़े पहनता, अपने जूतों पर स्वयं पॉलिश किया करता, कपड़े भी स्वयं धोया करता। हाँ, इस प्रकार जो बचत हुआ करती उससे वह पुस्तकें खरीदा करता।

एक बार उसे अर्थशास्त्र की एक पुस्तक की सख्त जरूरत थी और वह पुस्तक इतनी मंहगी थी कि उसके बजट से बाहर थी। बिना पुस्तक के तो पढ़ाई सम्भव नहीं थी इसलिए वह एक पुरानी पुस्तकों की दुकान पर पहुँचा। वहाँ अर्थशास्त्र की पुस्तक देखकर वह मन ही मन बड़ा प्रसन्न हुआ। 10 पौंड देकर उसने वह पुस्तक खरीद ली।

पुस्तक खरीदकर वह सीधे एक सस्ते होटल में पहुँचा। खाने की मेज पर बैठकर पुस्तक पढ़ने लगा। पुस्तक से नजरें हटाकर जैसे ही उसने मेज की तरफ देखा तो बैरा मुस्कुराते हुए भोजन की प्लेट लिए खड़ा था। तभी नौजवान को ध्यान आया कि जेब तो खाली है, सारे पैसों की तो पुस्तक खरीद ली है। अब क्या किया जाये?

फिर उसने बात बनाकर दबी मुस्कान के साथ कहा– 'क्षमा करना मेरे भाई... मुझे ध्यान ही नहीं रहा। आज मेरा व्रत है।' यह कहकर उस नौजवान की आँखें डबडबा आयीं। उसने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार झूठ बोला था। होटल से निकलकर वह अपने रूम पर पहुँचा और पूरे दस दिन केवल ब्रेड और गुड़ खाकर गुजारा करता रहा क्योंकि दस दिन के भोजन के पैसे तो पुस्तक खरीदने में खर्च हो गए थे।

तो आप जानना चाहेंगे यह नौजवान कौन था? यह नौजवान था– 'भीमराव अम्बेडकर'। उन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी हिम्मत नहीं हारी। परिस्थिति कैसी भी हो उन्होंने अपने हौंसले बुलन्द रखें। आगे चलकर जिसने हमारे देश के संविधान की रचना की। हमारे देश के गौरवमय इतिहास में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है।

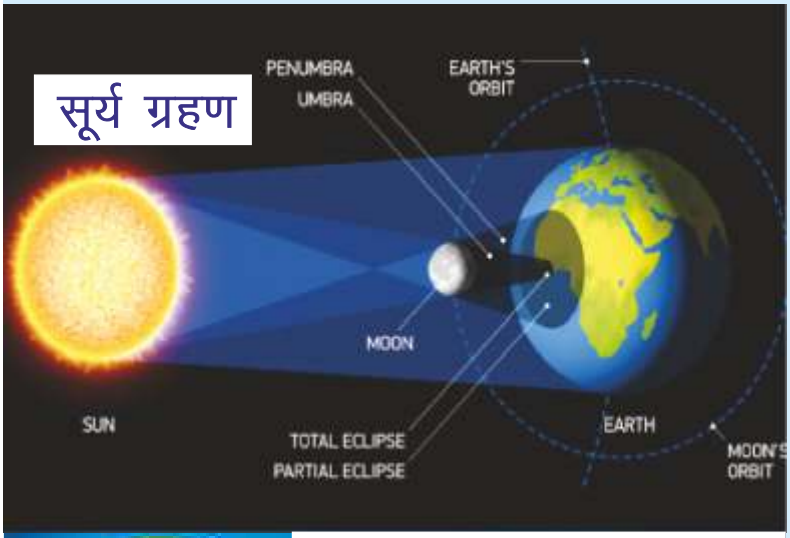

ग्रहण : एक नजर में

जब सूर्य तथा पृथ्वी के मध्य चन्द्रमा आ जाता है, तो चन्द्रमा के कारण सूर्य पूरी तरह स्पष्ट दिखाई नहीं देता है, इस स्थिति को 'सूर्य ग्रहण' कहते हैं। इस समय भारी मात्रा में पराबैंगनी किरणें उत्सर्जित होती हैं। इसलिए नंगी आँखों से सूर्य ग्रहण नहीं देखना चाहिए। यह स्थिति अमावस्या के दिन होती है।

जब सूर्य तथा चन्द्रमा के बीच पृथ्वी आती है, तो उसकी छाया चन्द्रमा पर पड़ने से चन्द्रमा धूमिल हो जाता है, इस स्थिति को 'चन्द्र ग्रहण' कहते हैं। यह हमेशा पूर्णिमा की रात को होता है।

चूंकि पृथ्वी और चन्द्रमा के परिक्रमा तलों में 5^0 का अन्तर पाया जाता है। इसलिए प्रत्येक पूर्णिमा तथा अमावस्या को ग्रहण नहीं होते। एक वर्ष में अधिकतम सात ग्रहण (चन्द्र व सूर्य ग्रहण दोनों) आ सकते हैं।

प्रस्तुति : प्रियंका चोटिया 'आंचल'

सीख नदी की

देखो सरिता बहती रहती
पल–पल आगे बढ़ती रहती,
अपने पथ को स्वयं बनाती
हर गम को वह हँस कर सहती।

बूँद–बूँद औरों को देती
करो भलाई सबको कहती,
जीवन उसका त्याग भरा है
सबकी प्यास बुझाती रहती।

देते सीख

त्यागी बनो सब, कहते पेड़
मुझ–सा त्याग सदा ही करना,

सूरज कहता आगे बढ़ना
कभी किसी से तुम मत डरना।

कहे चन्द्रमा शीतल बनकर
मुझ–सी प्रीत सदा ही रखना,

चींटी कहती आलस छोड़ो
मेहनत से कभी न डरना।

जल कहता है प्यास बुझाओ
मुझ–सी चाल सदा अपनाओ,

सीख जहाँ से जो मिल जाये
जीवन में उसको अपनाओ।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

किट्टी, क्या तुमने कविता लिखी?
नहीं मैंने तो कोई कविता-ववितता नहीं लिखी। अगर टीचरजी पूछेंगी तो बोल दूंगी कॉपी घर पर भूल गई।
सभी बच्चे अपनी-अपनी कॉपी खोलो और जो कल कविता लिखने को दी थी क्या वह सभी बच्चों ने लिख ली?
मोंटू, चलो कविता सुनाओ जो तुमने लिखी हैं।
मैम, (वर्षा आई झूमकर-झूमकर .....)

किट्टी, शैतानी मत करो, मोंटू की कविता ध्यान से सुनो।
टीचरजी, पर मैं तो कॉपी घर पर ही भूल गई।
चलो! किट्टी अब तुम्हारी बारी।
किट्टी, तुम्हें कुछ पंक्तियाँ तो याद होंगी, तुम वही सुनाओ।
वर्षा–वर्षा–वर्षा... टीचरजी याद नहीं आ रही।

टीचरजी, क्या मैं अपनी कविता सुना सकता हूँ?
चलो, ठीक है तुम सुनाओ!
शुक्र है, आज तो चिंटू ने मुझे पिटाई खाने से बचा लिया। आगे से मैं भी अपना काम पूरा करूंगी और दूसरों का मज़ाक भी नहीं उड़ाऊंगी।

वैज्ञानिक जानकारी : डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : यदि पानी में पहले बर्फ डालकर चीनी घोलें तो चीनी देर में क्यों घुलती है?

उत्तर : दरअसल, किसी भी ठोस की विलेयता ताप पर निर्भर करती है। पानी में बर्फ डालने से ताप कम हो जाता है जिससे पानी की विलायकता भी कम हो जाती है। यही कारण है कि पानी में यदि बर्फ को पहले डालकर बाद में चीनी मिलाई जाए तो चीनी देर में घुलती है। इस स्थिति से बचने के लिए तुम्हें सदैव यह बात याद रखनी चाहिए कि शर्बत बनाने के लिए पानी में पहले चीनी मिलाकर बाद में बर्फ डालनी चाहिए।

प्रश्न : हीरे को गलाना कठिन क्यों है?

उत्तर : हीरा एक बहुमूल्य धातु है जिसके आभूषण शरीर की खबूसूरती में चार–चाँद लगाने में सहायक होते हैं। लेकिन क्या तुम जानते हो कि हीरे को गलाना कठिन क्यों होता है? दरअसल, धरती की अब तक ज्ञात सर्वाधिक कठोर धातु 'हीरा' ही है। हीरे को गलाकर द्रव (Liquid) में नहीं बदला जा सकता है। हीरे को गलाने के लिए समुद्र तल पर पृथ्वी पर पड़ने वाले वायु दाब का सौ लाख गुना दाब चाहिए। इतना अधिक दाब उत्पन्न करना बड़ी मुश्किल बात है। अतः हीरे को गलाना कठिन होता है।

प्रश्न : यदि गमलों में अधिक जल डाल दिया जाए तो पौधे क्यों मर जाते हैं?

उत्तर : तुम अपने घरों में पौधे लगाने के लिए खूबसूरत गमलों का अवश्य प्रयोग करते होंगे। गमलों में पौधे लगाने के लिए उनमें मिट्टी रखनी अत्यन्त आवश्यक है। इस मिट्टी में वायु भरी रहती है। यदि गमले में आवश्यकता से अधिक पानी डाल दिया जाए, तो मिट्टी में उपस्थित वायु की जगह पानी ले लेता है। यह तो तुम जानते ही हो कि वायु सभी जीवधारियों के लिए कितनी उपयोगी होती है। अतः पौधों को श्वसन के लिए वायु नहीं मिल पाती और पौधे मर जाते हैं।

जानकारी : डॉ. विनोद गुप्ता

जासूसी जूते

जूते तो आप और हम सभी पहनते हैं लेकिन उनमें ऐसी कोई खासियत नहीं होती किन्तु यहाँ हम जिन जूतों की बात कर रहे हैं, वे कोई साधारण जूते नहीं हैं अपितु जासूसी जूते हैं। यूं तो सेना के पास अपने जासूस होते हैं लेकिन अब बारूदी सुरंगों (लैंड माइन) का पता लगाने के लिए एक तरह का गैजेट तैयार किया गया है। यह जूतों में फिट हो सकेगा। इसके बाद जूते बताएंगे कि जमीन के नीचे बारूदी सुरंगें कहाँ दबी हुई हैं।

कोलंबियानी डिजाइन फर्म लीमर स्टूडियो ने इसका प्रोटोटाइप पेश किया है। जल्द ही यह सुरक्षा बलों को मिल सकेगा। संयुक्त राष्ट्र भी इसके लिए प्रयासरत है।

जूते के सोल में लगी होगी सेंसर प्लेट। यह जूते के बाहरी सोल और इनर सोल के बीच में लगेगी। इसमें मेंटल सर्किट है जो इलेक्ट्रोमेगनेटिक फील्ड पर काम करेगा। लैंड माइन के स्कैन होते ही सेंसर चिप सक्रिय हो जाएगी। मॉनिटर पर लाल डॉट्स देंगे लैंड माइन की मौजूदगी का संकेत। एक तय दूरी (सेफरेंज) पर कलाई में बंधा मॉनिटर अलर्ट कर देगा।

एक अनुमान के अनुसार लैंड माइन के हमलों में 72 प्रतिशत शिकार बेकसूर लोग होते हैं। बॉर्डर एरिया के करीब रहने वाले लोग इसकी चपेट में आकर अपनी जान गंवा देते हैं। अगर सेना इन जूतों की मदद से इस प्रकार छिपे हुए माइन्स का पता लगा लेती है तो यकीनन बेकसूर लोगों को इसका फायदा मिलेगा।

विशेषज्ञों के मुताबिक यह धातुओं वाली लैंड माइन का तो पता लगा सकता है लेकिन इसके समक्ष असली चुनौती प्लास्टिक कवर वाली लैंड माइन की है, जिनका पता लगाना थोड़ा कठिन अवश्य होगा।

यह नक्सली और आतंक प्रभावी क्षेत्रों में काफी उपयोगी होगा। यहाँ सुरक्षा बलों को निशाना बनाने के लिए आतंकी लैंड माइन का उपयोग करते हैं।

आलेख : किरण बाला

शीशे जैसी चमकने वाली मकड़ी

दुनिया में कई तरह के जीव–जंतु पाए जाते हैं, जो आमतौर पर अपनी प्रजाति के अन्य जीवों से काफी अलग होते हैं। हाल ही में एक ऐसी मकड़ी के बारे में पता चला है जो देखने में ऐसी लगती है कि वह पूरी तरह से शीशे की बनी हुई है या फिर किसी नाजुक गहने का टुकड़ा हो। यह थ्वाइटसिना जीनस प्रजाति की मकड़ी है। इस प्रजाति में कई तरह की मकड़ियां पाई जाती हैं। उनमें से ये भी एक है। इसे देखने पर ऐसा लगता है मानो इसके पेट पर चमकदार धातु लगी हो, लेकिन वह उसकी स्किन होती है। इसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है, लेकिन यह मकड़ी आस्ट्रेलिया और सिंगापुर में पाई जाती है।

आदिम युग से पाई जाने वाली टेरेंटुलास व समवर्गी जातियों की मिगालोमार्फी मकड़ियों की उम्र सबसे अधिक होती है। सन् 1935 में मेजातलान मैक्सिको में एक वयस्क मादा टेरेंटला मकड़ी पकड़ी गई थी। उस समय अनुमानतः उसकी उम्र 12 वर्ष थी। उसके बाद 16 वर्ष तक उसे प्रयोगशाला में रखा गया। इस प्रकार वह 28 वर्ष तक जीवित रही।

अफ्रीका में उप–मरुभूमि क्षेत्र तथा मध्य–पूर्व (मिडिल ईस्ट) में पाए जाने वाले सोलपुगा जाति के सन स्पाइडर नामक लम्बे पांव वाले मकड़े की चाल सबसे तेज होती है। ये छिपकली आदि खाते हैं और इनकी चाल 16 किमी. प्रति घंटे से भी अधिक होती है।

उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में पाई जाने वाली नेफिला वंश की मकड़ियां सबसे बड़े जाल बुनती हैं। इनके जाले एरियलनुमा या गोलाई वाले होते हैं। इनकी परिधि 573 सेमी. तक नापी गई है।

फोन्युट्रिया वंश की घुम्मकड़ मकड़ियां विश्व की सबसे जहरीली मकड़ियां होती हैं। ये ब्राजील में पाई जाती हैं। विशेषकर पी. फेरा का जहर तमाम मकड़ियों में सबसे तेज होता है। इसका असर तंत्रिकाओं के ऊतकों पर पड़ता है। ये विशालकाय आक्रामक मकड़ियां प्रायः आदमियों के घरों में घुस जाती हैं और उनके कपड़ों व जूतों आदि में बैठ जाती हैं। अगर इन्हें छेड़ दिया जाए, तो वे गुस्से में आ जाती हैं और बुरी तरह से काटती हैं। इस तरह के सैकड़ों किस्से हर साल प्रकाश में आते हैं। सौभाग्य से इनके असर की एक असरदार काट उपलब्ध है। इनके काटने से मरने वाले प्रायः 7 वर्ष से छोटे बच्चे ही होते हैं।

प्रेरक–कथा : रामकुमार आत्रेय

अनोखा घुड़सवार

एक व्यक्ति घोड़े पर सवार था। उसकी सेहत बहुत अच्छी थी। उसने साफ–सुथरे कपड़े पहने हुए थे। सिर पर हैट था। वह घूमने के लिए निकला था। घूमते–घूमते वह नगर के बाहरी हिस्से में पहुँच गया।

वहाँ एक बड़ा भवन बन रहा था। व्यक्ति ने भवन की ओर देखा। भवन लम्बी–चौड़ी जगह पर बन रहा था। वहाँ काफी मजदूर और कारीगर काम कर रहे थे। कारीगर दीवारें चिनने में जुटे थे तो मजदूर वहाँ तक सामग्री पहुँचाने में जुटे थे। सब काम बिल्कुल ठीक ढंग से चल रहा था।

व्यक्ति यह सब देखता हुआ आगे बढ़ने ही वाला था कि सहसा उसकी नजर मजदूरों की एक टोली पर पड़ी। मजदूर एक बड़े पत्थर को वहाँ से उठाकर आगे दीवार के समीप ले जाना चाह रहे थे। पत्थर बहुत भारी था और उसे सामने बन रही दीवार में लगाया जाना था।

मजदूर यूं तो कई थे, परन्तु पत्थर उनकी सामर्थ्य से कहीं अधिक वजनदार था। वे उसे उठाने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा रहे थे। पत्थर अपनी जगह से थोड़ा–सा हिलता और फिर से अपनी पुरानी अवस्था में लौट जाता। मजदूर पसीना–पसीना हो रहे थे। वे उसे वहाँ से उठाकर ले जाने के लिए अपनी सारी युक्तियों को उपयोग में ला चुके थे। सभी युक्तियां बेकार साबित हुई जा रही थीं। मजदूरों से थोड़ा हटकर एक और व्यक्ति खड़ा था। उसकी वेशभूषा और व्यवहार से लग रहा था कि वह या तो ठेकेदार है या मजदूरों पर निगाह रखने वाला सुपरवाइजर। बाद में पता चला कि वह एक सुपरवाइजर ही है।

सुपरवाइजर अपनी जगह पर खड़े–खड़े मजदूरों का हौंसला बढ़ाता रहा लेकिन जब

वे अपना काम कर पाने में विफल रहे तो वह उन्हें भला–बुरा कहने लगा। उसने मजदूरों को कामचोर तक कह डाला। व्यक्ति घोड़े की पीठ पर बैठे हुए यह सब देख रहा था। उसके मन में मजदूरों के प्रति सहानुभूति उमड़ आई। उसका अनुमान था कि यदि एक और व्यक्ति मजदूरों के साथ लग जाए तो वह भारी पत्थर आसानी से दीवार पर रखा जा सकता है।

उसने सुपरवाइजर के निकट पहुँचकर विनम्रतापूर्वक कहा– ''महाशय जी, यदि आप, स्वयं इन मजदूरों के साथ लगकर थोड़ी–सी ताकत का उपयोग कर लें तो इसे सरलता से दीवार तक पहुँचाया जा सकता है।''

घुड़सवार व्यक्ति के द्वारा इस प्रकार काम में दखल दिया जाना सुपरवाइजर को बिल्कुल भी अच्छा न लगा। उसने उखड़े हुए स्वर में उत्तर दिया– ''मैं यहाँ काम करने के लिए नहीं, काम करने वाले मजदूरों पर नज़र रखने के लिए हूँ, समझे। यह काम मजदूरों का है, इन्हें ही करने दें।''

''आप देख चुके हैं कि यह भारी पत्थर सब लोग मिलकर भी नहीं उठा पा रहे हैं। इनकी ईमानदारी पर आपको सन्देह नहीं करना चाहिए। ये पूरी तरह पसीने से भीगे हुए हैं। आप जरा–सा सहारा दे देंगे तो यह काम झट से हो जायेगा।'' घुड़सवार व्यक्ति ने सुपरवाइजर को समझाने का प्रयास करते हुए फिर से कहा।

सुपरवाइजर गुस्सा हो उठा। बोला– ''आपको इन मजदूरों से ज्यादा ही सहानुभूति है तो घोड़े से उतरकर इनका सहयोग क्यों नहीं करते? तभी तो पता चलेगा कि आपके मन में इनके लिए सच्ची हमदर्दी है।''

इतना सुनते ही घुड़सवार घोड़े से नीचे उतर आया। अपना कोट और हैट उतारकर एक ओर रख दिये। फिर मजदूरों के साथ आकर उनका उत्साह बढ़ाते हुए कहा ''शाबाश! पूरा जोर लगाओ, भाइयो! पत्थर अभी अपनी जगह पहुँच जाएगा।''

मजदूरों पर घुड़सवार व्यक्ति की बात का प्रभाव तुरन्त पड़ा। उसने भी अपनी पूरी ताकत लगा दी। देखते ही देखते पत्थर दीवार के पास पहुँच गया।

घुड़सवार ने अपने हाथ साफ किये। कोट पहना, सिर पर हैट रखा। फिर घोड़े पर सवार होकर बोला– ''सुपरवाइजर महोदय, कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता। काम, काम होता है। याद रखो दूसरों की मदद करने वाला ही सच्चा इन्सान होता है। यदि कभी किसी काम को निपटाने में एक आदमी की जरूरत पड़े तो तुम राष्ट्रपति भवन आ जाना।''

सुपरवाइजर ने अपने सामने घोड़े पर बैठे अमेरिका के पहले राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन को नहीं पहचाना था। राष्ट्रपति की बात सुनकर वह शर्म से पानी–पानी होकर उनसे क्षमा मांगने लगा।

• • •

प्रस्तुति : रूपनारायण काबरा

वृक्षों में आत्मा

जगदीशचन्द्र बसु का विलक्षण आत्मविश्वास

वृक्षों में भी चेतनता है। इसको सिद्ध करने वाले रेडियो के प्रथम आविष्कारक भी थे पर उस समय भारत पर अंग्रेजों का शासन था। अतः उनका नाम नहीं भेजा गया और इटली के वैज्ञानिक मारकोनी को नोबेल पुरस्कार मिल गया।

एक बार वे पेरिस में साधारण नागरिकों के बीच प्रयोग सहित व्याख्यान देने वाले थे। वे यह दिखाना चाहते थे कि विष का पौधों पर भी वैसा ही प्रभाव पड़ता है, जैसा प्राणियों पर। जब वे व्याख्यान देने के लिये साज–सामान की देखभाल करने लगे तो पता चला कि विष की शीशी तो खाली है। जिस भद्र महिला के यहाँ वे ठहरे हुये थे, उससे उन्होंने पास के किसी दवाई बेचने वाले का पता पूछा। महिला ने कहा कि आप एक कागज पर दवाई का नाम लिख दीजिये और मैं अपनी नौकरानी से मंगवा देती हूँ। डॉ. बसु ने कागज के एक टुकड़े पर 'पोटेशियम साइनाइड' का नाम लिख दिया। यह तिलभर खा लेने से भी मृत्यु हो सकती है। नौकरानी ने दवाई के नाम का कागज दुकानदार को दिया। दुकानदार जानता था कि इस नौकरानी की मालकिन बड़ी सम्पन्न और प्रतिष्ठित महिला थी। उसने समझा कि मालकिन किसी घरेलू–झगड़े या अन्य किसी कारण से विष खाकर आत्महत्या करना चाहती है। इसलिये उसने वह जहर नहीं देकर दानेदार चीनी दे दी।

डॉ. बसु यह दवा (जहर) लेकर व्याख्यान देने चल दिये। दर्शकों को विष का प्रभाव दिखाने के लिये जब उन्होंने पौधे पर विष का प्रयोग किया तो पौधा मुरझाने के बजाय और अधिक खिल उठा। डॉ. बसु चकित हो गये कि बात क्या है? उनको समझने में तनिक भी देर नहीं लगी। उन्हें अपने सिद्धान्तों एवं यंत्रों पर इतना विश्वास था कि दर्शकों के सामने घोषणा कर दी कि यह विष नहीं कोई पोषक पदार्थ है। इतना ही नहीं उन्होंने निर्भय होकर विष नाम से खरीदी इस चीज को चख लिया, यह देखकर सभी भौचक्के रह गये। फिर उन्होंने मधुर मुस्कान के साथ घोषणा की कि यह विष नहीं, चीनी है। संयोग की बात वह दवाई बेचने वाला भी दर्शको में बैठा हुआ था। वह उठा और डॉ. बसु के पास पहुँचा। उसने 'पोटेशियम साइनाइड' देने के बदले चीनी देने का कारण बताया तो सारा हॉल हँसी से गूंज उठा और सभी ने डॉ. बसु के दृढ़विश्वास की सराहना की। ऐसे थे महान वैज्ञानिक डॉ. जगदीश बसु।

बच्चों! आप भी आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते रहो।

पढ़ो और हँसो

एक बच्चा अस्पताल में जन्म लेते ही बोला– नर्स, तुम्हारे पास मोबाइल है।

नर्स : हाँ है, क्या करोगे?

बच्चा : ऊपर वाले को फोन करूँगा कि मैं सही सलामत पहुँच गया हूँ।

★----------★

माँ : (रोहित से) उठ जा आलसी, सूरज कब का निकल आया है।

रोहित : तो क्या हुआ माँ, वो सोता भी मुझसे पहले है।

★----------★

ग्राहक : कोई अच्छा–सा कपड़ा दिखाओ।

दुकानदार : प्लेन में दिखाऊँ क्या?

ग्राहक : 'प्लेन' में जाने की क्या जरूरत है? यहीं दुकान में दिखा दो।

★----------★

पत्नी : मुझे इस भिखारी से सख्त नफरत है।

पति : क्यों?

पत्नी : मैंने एक बार दया करके उसे खाना खिलाया था। वो दूसरे दिन मुझे एक किताब गिफ्ट कर गया– 'खाना कैसे बनाएं'?

★----------★

एक चोर ने किसी के घर का दरवाजा खटखटाया। गृहस्वामी ने उठकर दरवाजा खोला तो चोर बोला– सोना कहाँ है?

गृहस्वामी बोला– पूरा घर खाली है भाई! जहाँ चाहो वहाँ सो जाओ।

★----------★

मंटू : (पिता से) पिताजी, दरवाजे पर लोग स्वीमिंग पुल के लिए चन्दा मांग रहे हैं?

पिता : बेटा, कोई बात नहीं। उन्हें एक बाल्टी जल दे दो।

★----------★

पार्थ : (दीदी से) दीदी तुम रस के साथ मलाई क्यों खा रही हो?

दीदी : क्योंकि मेरा रस–मलाई खाने का दिल कर रहा था।

★----------★

अध्यापक : (पार्थ से) उम्मीदवार किसे कहते हैं?

पार्थ : सर, जिसके आने की उम्मीद बार–बार की जाए और जो फिर भी

– सुरेन्द्र कुमार (हरिहरपुर)

ना आए। उसे उम्मीदवार कहते हैं।

लवली : (मिंटू से) यह हरे रंग वाली बर्फी बहुत स्वादिष्ट है। कहाँ से लाए तुम?

मिंटू : सालभर पहले जब मैं इसे दिल्ली से लाया था तब तो इसका रंग सफेद था। अब पता नहीं हरा कैसे हो गया?

★----------★

नदी में नहाने के लिए जाते हुए हाथी का पैर चींटियों पर पड़ गया। इससे दो–तीन चींटियां गुस्से में आकर उस हाथी पर चढ़ गईं तो रानी चींटी ने उन चींटियों से चिल्लाकर कहा– इस हाथी को डूबो–डूबो कर मारो, डूबो–डूबो कर।

★----------★

रेस देखते हुए गोलू ने राकेश से कहा– ईनाम किसको मिलेगा।

राकेश : सबसे आगे वाले को।

गोलू : तो फिर पीछे वाले क्यों भाग रहे हैं?

★----------★

एक मोटी औरत ने एक चोर को पकड़ा और उसके ऊपर बैठ गई फिर अपने नौकर से बोली– जा, पुलिस को बुला ला।

नौकर बोला – मेरी चप्पल खो गई है।

चोर चिल्लाया – मेरी पहन ले, पर जल्दी जा।

★----------★

नेताजी ने अपने भाषण के दौरान कहा– हमें अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश करनी चाहिए।

इतना कहना था कि एक महिला भीड़ में से तुरन्त खड़ी हुई और चिल्लाकर बोली– मैं तो बहुत देर से खड़ी होने की कोशिश कर रही हूँ पर यह पुलिस वाला बार–बार बैठा देता है।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

★----------★

CROSSWORD SOLUTION

1 सु	2 भ	द्रा		3 मे	न	4 का
	ग		5 मा	ले		ल
6 को	त	वा	ल		7 प	का
	सिं		8 दी	ना	र	
9 स	ह	10 दे	व		दा	
त		व		11 बा	दा	12 म
लु		13 रा	घ	व		म
14 ज	र्म	नी		15 न	म्र	ता

कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

देखे जो न उलूक

एक आदमी था। उसकी विद्वता की चर्चा दूर–दूर तक होती थी। विद्वता के सभी गुणों से वह युक्त था। विनम्रता भी उसमें कूट–कूटकर भरी हुई थी। हर कोई उसे मान–सम्मान देता। वह भी हर किसी की कद्र करता। अभिमान को वह कभी अपने पास फटकने नहीं देता। अपनी गुणवत्ता से वह सदैव दूसरे की मदद ही किया करता। परोपकार के कार्यों से उसे सुकून मिलता। जीवन में प्रसन्नता आती।

आदमी कितना भी गुणी क्यों न हो, सभी को नहीं भाता। अच्छा नहीं लगता। उस विद्वान व्यक्ति के साथ भी ऐसी ही बात थी। एक मूर्ख व्यक्ति को वह फूटी आँख नहीं सुहाता था। उसके किसी भी गुण की चर्चा सुनकर वह क्रोधित हो जाता और उसकी बुराई करना शुरू कर देता। कोई भी व्यक्ति उससे उलझना पसन्द नहीं करता। ऐसे में मूर्ख आदमी की बात सुनकर नजरअंदाज कर देता। अपनी कोई प्रतिक्रया नहीं देता। चुप्पी साध लेता। फलतः मूर्ख व्यक्ति समझता कि सभी उसकी बातों से सहमत हैं। अतएव जब भी जहाँ भी उसे मौका मिलता, वह विद्वान आदमी में खोट निकालने से कभी नहीं चूकता। वह अक्सर उसके बारे में दूसरों के सामने दो टूक कह देता, मैं उसे कुछ नहीं समझता। कुछ नहीं मानता। मेरी नजर में वह बिल्कुल घटिया किस्म का आदमी है। लोग पागल हैं जो उसके गुणगान करते हैं। वह आदर का पात्र तो है ही नहीं।''

आमने–सामने होने पर मूर्ख व्यक्ति विद्वान व्यक्ति को नीचा दिखाने की चेष्टा करता। उसे किसी तरह अपमानित करना चाहता और करता भी। मगर विद्वान व्यक्ति उसकी बात पर ध्यान नहीं देता। ऐसा करने पर मूर्ख व्यक्ति चिढ़ जाता।

बहुत से लोगों को मूर्ख आदमी की ये बेहूदी हरकत अच्छी नहीं लगती। फिर भी वे चुप रहते।

एक दिन की बात है। गाँव के चौपाल में विद्वान आदमी के गुणों का बखान कई लोग कर रहे थे। मूर्ख आदमी भी वहाँ मौजूद था। वह झट बोल उठा, ''तुम लोग जिसकी इतनी बड़ाई कर रहे हो, वह उसके बिल्कुल काबिल नहीं है। मैं यही मानता हूँ।''

वहाँ बैठे एक युवक को मूर्ख आदमी की बात अच्छी नहीं लगी। उसने झट उससे पूछा, ''एक सवाल करूं?''

''जरूर,'' जवाब मिला।

''उल्लू को कभी देखा है, उसके बारे में कुछ जानते हो?''

''क्यों नहीं!''

'' उसे दिन में दिखाई देता है?''

''बिल्कुल नहीं।''

''उल्लू को दिन में दिखाई नहीं देता है, क्या इससे दिन की सुन्दरता घट जाती है?''

''नहीं तो।''

''उसी तरह तुम उल्लू हो। तुम्हें अगर विद्वान व्यक्ति की अच्छाई दिखाई नहीं देती तो यह तुम्हारा दोष है, उसका नहीं। तुममें जो अंधापन है, उसकी वजह से विद्वान व्यक्ति की महत्ता कम नहीं हो जाती। यह बात तुम अच्छी तरह जान लो। उसकी निंदा–शिकायत कर तुम अपनी मूर्खता ही जाहिर कर रहे हो और कुछ नहीं।''

युवक की खरी–खोटी बात से मूर्ख व्यक्ति सकपका गया। लज्जित हो उठा। उसी क्षण से उसने विद्वान व्यक्ति के बारे में कुछ भी कहना बंद कर दिया।

'नाका' से 'नासा' हुआ नाम

प्रसिद्ध वैज्ञानिक संस्थान 'नासा' यानि (नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन) जो पहले 'नाका' यानि नेशनल एडवाईजरी कमेटी फॉर एरोनॉटिक्स के नाम से जाना जाता था।

'नासा' के प्रशासक की नियुक्ति शिखर स्तर से होती है। अर्थात् अमेरिका के राष्ट्रपति द्वारा प्रशासक को नामजद किया जाता है। राष्ट्रपति की इस नामजदगी के बाद अमेरिकी सीनेट इस नाम की पुष्टि करती है। प्रशासक ही संस्थान का सर्वेसर्वा है। यह संस्थान विभिन्न शोधकार्यों की निगरानी करता है। संस्थान के किन शोधकार्यों के लिए कितनी धनराशि आवंटित की जाए, इसका अंतिम निर्णय भी प्रशासन ही करता है।

1969 में क्रियान्वित 'प्रोजेक्ट अपोलो' अभियान 'नासा' के सफलतम अन्तरिक्ष अभियानों में से एक है। इसी अभियान के तहत पहली बार तीन अंतरिक्ष यात्रियों ने चन्द्रमा पर कदम रखे थे। चन्द्रमा पर मानव को पहुँचाने वाले इस अभियान का नाम 'अपोलो 11' था।

1981 में नासा ने मानवयुक्त अंतरिक्ष यान 'स्पेस शटल' की एक नई श्रृंखला शुरू की। यह कार्यक्रम आज तक जारी है। इस कार्यक्रम का एक अहम् मकसद अंतरिक्ष में स्थायीतौर पर एक अन्तर्राष्ट्रीय स्पेस स्टेशन की स्थापना करना है।

प्रस्तुति : विभा वर्मा

अक्टूबर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 **सेफाली गौतम** 13 वर्ष
गाँव : सुरैला, पोस्ट : परसरामपुर,
जिला : बस्ती (उ.प्र.)

2 **नव्या** 12 वर्ष
268, सेक्टर 16,
पंचकुला (हरि.)

3 **समीक्षा** 11 वर्ष
1185/13, सुन्दर नगर,
अजमेर (राजस्थान)

4 **अमनप्रीत सोनी** 10 वर्ष
दिल्ली पब्लिक स्कूल,
झाकड़ी, जिला : शिमला (हि.प्र.)

5 **दीपिका** 5 वर्ष
सी–1/88 – बी
केशवपुरम, दिल्ली–35

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

सिद्धि हरणे (मारूतिधाम, वडोदरा)
सुहावनी (मोतियाखान, दिल्ली),
सिमरन (कटवारिया सराय, दिल्ली),
दीपिका (केशवपुरम, दिल्ली),
सृजना (सोरगढ़), वैष्णवी (अकबरपुर),
यशराज (चण्डीगढ़),
साबिर कुमार (पंजाला),
हिमांशु (गुरुग्राम), काव्या (तपा मंडी),
पुण्या (छत्तरपुर, दिल्ली),
राज (चाराली बाजार, डिगबोई),
रजित (ठाकुरपुरा),
निधि (विरार), यशन (नासिक),
भूमिका (पांडव नगर, दिल्ली),
शगुनप्रीत (डाबरपुर),
स्तुति (नवाबगंज, कानपुर),
चंचल (पलवल), गोलू (सल्लागढ़),
अनिरूद्ध (टिहरी गढ़वाल),
निश्चय (मोहाली),
आन्या (पीतमपुरा, दिल्ली),
शिवांगी (अंबरनाथ),
दक्ष, सोमजानी, भूमि, कृष्णा (गोधरा)।

दिसम्बर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 20 दिसम्बर तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) फरवरी अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

आपके पत्र

पुस्तक समीक्षा –
'पढ़ें पढ़ाएं बाल कविताएं'

लेखक : हरजीत निषाद, प्रस्तुति : विकास अरोड़ा

अच्छे संस्कारों द्वारा ही बच्चों के सुन्दर भविष्य की नींव रखी जा सकती है। इसके लिए जरूरी है कि उन्हें बचपन से ही अच्छी बातों से अवगत करवाया जाए और बुराइयों से बचने की प्रेरणा दी जाए। बच्चों के सम्पूर्ण विकास के लिए सन्त निरंकारी मिशन निरंतर प्रयास कर रहा है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए समय–समय पर बाल साहित्य का प्रकाशन किया जाता है। पुस्तक 'पढ़ें पढ़ाएं बाल कविताएं' भी इस कड़ी का अगला हिस्सा है।

कविताओं में एक विशेषता होती है कि ये कभी पुरानी नहीं होती। आज भी नई, एक वर्ष बाद पढ़ें तो भी नई क्योंकि इनसे मिलने वाली शिक्षाएँ शाश्वत् हैं, कालातीत यानि समय से परे हैं। इस पुस्तक में आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक ज्ञान प्रदान करने वाली कविताओं का संग्रह हैं। ये कविताएं मनोरंजक होने के साथ–साथ सार्थक संदेश भी प्रदान करती हैं, इसलिए बच्चों के कोमल मनों पर सकारात्मक प्रभाव डालती हैं। ये न केवल उन्हें देश, समाज, वातावरण और पर्यावरण आदि विषयों की उपयोगी जानकारी प्रदान करती हैं बल्कि उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए भी प्रेरित करती हैं।

इन कविताओं में कोई बनावटीपन नहीं है। इनकी भाषा सहज और सरल है, इसलिए ये बच्चों को आसानी से समझ आ जाती है। इन कविताओं के विषयों की विविधता चमत्कृत करती है। जहाँ गिलहरी, तोता, चील, हाथी और चिड़िया जैसे जीवों को आधार बनाकर कविताएं लिखी गई हैं, वहीं होली, दीवाली और क्रिसमस जैसे त्यौहारों पर और गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस और शिक्षक दिवस पर भी कविताएं हैं।

शहीद भगत सिंह, लाला लाजपत राय और महात्मा गांधी जैसे स्वतन्त्रता सेनानियों के जीवन को आधार बनाकर लिखी कविताएं भी इस संग्रह में शामिल हैं। कुल मिलाकर अलग–अलग फूलों का एक गुलदस्ता बनाया है जिसमें मानव एकता, वायुमंडल, वृक्ष, धरती, जल, हरियाली, संविधान जैसे विभिन्न विषयों का महत्व समझाया गया है। बच्चे इन कविताओं को अपनी मॉर्निंग एसैम्बली और अन्य समारोहों के अवसर पर सुना सकते हैं।

पुस्तक का कवर आकर्षक, पेज बढ़िया व छपाई सुन्दर है। इस पुस्तक की साज–सज्जा और प्रस्तुतिकरण आकर्षित करते हैं। यह पुस्तक गागर में सागर के समान अपने आप में अद्वितीय है। इसकी जितनी प्रशंसा की जाए, कम है।

इस पुस्तक की कीमत सिर्फ 10 रुपये रखी गई है। इतनी कम कीमत में आजकल ऐसी उत्कृष्ट पुस्तक मिलना दुर्लभ है। हर छोटे–बड़े शहर में सन्त निरंकारी सत्संग भवन बने हैं। इन भवनों में प्रायः रविवार की साप्ताहिक सत्संग के समय प्रकाशन स्टॉल खुलते हैं। यह पुस्तक इन प्रकाशन स्टालों पर उपलब्ध है। यह पुस्तक बच्चों के जन्मदिन, रक्षाबंधन इत्यादि अवसरों पर उपहार के तौर पर देने के लिए भी उपयुक्त है।

प्रकाशक : सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
उपलब्धता : सन्त निरंकारी मण्डल के प्रकाशन स्टॉल
पृष्ठ संख्या : 76, मूल्य : 10 रुपये

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning
with exciting and fun features
highlights our mission's message.
Visit regularly to watch tiny tots
excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share
your talent
in form of
painting, poetry
& story

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Licence No. U (DN)-23/2015-17
Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan

1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)

e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
31, Pratapganj,
VADODARA-390022 (Guj.)
Ph. 0265-2750068

KANNADA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road, Southend Circle,
Basavangudi, BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1-D, Nazar Ali Lane, Near Beck Bagan,
KOLKATA-700 019
Ph. 033-22871658

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)